



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 100]

नई दिल्ली, मंगलवार, मार्च 25, 2008/चैत्र 5, 1930

No. 100]

NEW DELHI, TUESDAY, MARCH 25, 2008/CHAITRA 5, 1930

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 मार्च, 2008

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जन.गण. के मूल के/वहां से निर्यातित हाइड्रो फ्लोरिक एसिड के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा।

सं. 4/13/2006-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली भी कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए,

क. पृष्ठभूमि

2. यतः उपर्युक्त नियमों को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने चीन जन. गण. (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के/वहां से निर्यातित हाइड्रो फ्लोरिक एसिड (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध उत्पाद/ वस्तु कहा गया है) के आरोपित पाटन के बारे में 11 दिसंबर, 2001 को पाटनरोधी जांच शुरू की। प्राधिकारी की दिनांक 15 फरवरी, 2002 के प्रारंभिक जांच परिणामों के आधार पर 28 मार्च, 2002 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 35/2002-सी.शु. के तहत संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर अंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था। प्राधिकारी के अंतिम जांच परिणाम 26 नवम्बर, 2002 की अधिसूचना द्वारा प्रकाशित किए गए थे और 15 जनवरी, 2003 की अधिसूचना सं. 10/2003-सी.शु. के तहत संबद्ध देश की संबद्ध वस्तु पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था।

3. यतः संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादन के एक बड़े भाग का प्रतिनिधित्व करते हुए मै टेम्फेक इंडस्ट्रीज लि. कुश्नारोद द्वारा दायर विधिवत पुष्टिकृत आवेदन के आधार पर प्राधिकारी ने इस बात की जांच करने के लिए कि क्या शुल्क लगाया किए जाने से पाटन एवं क्षति जारी रहेगी या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, अधिनियम की धारा 9क(5) के अंतर्गत 17

मार्च, 2007 की अधिसूचना के तहत संबद्ध देश के मूल के संबद्ध उत्पाद के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा शुरू की।

4. और यतः 26 मार्च, 2007 की अधिसूचना सं. 45/2007-सीशु. के तहत केन्द्र सरकार द्वारा धारा 9क(5) के अंतर्गत निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की अवधि एक वर्ष दिनांक 27 मार्च, 2008 तक बढ़ा दी गई थी और निर्णायक समीक्षा जांच परिणाम का समय भी बढ़ाकर 26 मार्च, 2008 तक कर दिया गया है।

ख. प्रक्रिया:

5. निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है।

- (i) उपर्युक्त नियम 5(5) के अनुसार प्राधिकारी ने समीक्षा जांच शुरू करने की कार्यवाही से पूर्व आवेदक से पूर्णतः प्रलेखित आवेदन प्राप्त होने के बारे में भारत में संबद्ध देश के दूतावास को सूचित किया।
- (ii) उपर्युक्त नियम 6(2) के अनुसार प्राधिकारी ने उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों, आयातकों, उद्योग एसोसिएशनों, संबंधित देश के दूतावास और आवेदकों को भेजी तथा लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया।
- (iii) उपर्युक्त नियम 6(4) के अनुसार प्राधिकारी ने संगत प्रश्नावली की प्रति समस्त ज्ञात निर्यातकों तथा भारत में संबद्ध देश के दूतावास और अन्य हितबद्ध पार्टियों को उपलब्ध कराई।
- (iv) जांच शुरू करने के बारे में नई दिल्ली स्थित संबद्ध देश के दूतावास को भी इस अनुरोध के साथ सूचना दी गई कि वह निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें;
- (v) प्राधिकारी ने संगत सूचना मांगने के लिए संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजीं :
 - क्यूझूआ फ्लोरीन केमिकल कं लि., क्यूझूआओ, }
 - यिंगपेंग केमिकल कं लि., योंगकांग, } झेजियांग,
 - यिंगुआंग केमिकल कं लि., डोंगयांग, } चीन
 - सेनमेई केमिकल इंडस्ट्री कं. लि., वूयी, }
 - 3-एफ जिनयान केमिकल कं लि. जिनयान, } शॉनडोंग,
 - डोंगयू केमिकल कं लि., जिबू, } चीन
 - मेलियान केमिकल कं. लि., ताहझोऊ, }
 - एटो-3 एफ चांगसू केमिकल कं लि., चांगसू, } जियानसु,
 - जिहुआ केमिकल प्लांट. चांगसू, } चीन

- फूड केमिकल कं लि., शेयांग,
- संघाई टियानयुन फ्लोरीन केमिकल कं लि., संघाई, चीन
मोंगफेई केमिकल कं लि., शाओवू, फ्यूजियान, चीन

चीन जन.गण के किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया ।

- (vi) आयातक प्रश्नावली के साथ जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की एक प्रति आवेदन में सूचीबद्ध विभिन्न आयातकों को भी भेजी गई थी ।
- मै.कोम्पीटेंट डाइस्टफ एंड अलायड प्रोडक्ट्स प्रा.लि., गाजियाबाद,
 - मै. ओसवाल इंटरप्राइजेज, अहमदाबाद
 - मै. एमएफपीएल फ्लोरीन प्रोडक्ट लि., चेन्नई

तथापि आयातक प्रश्नावली का उत्तर आरंभ में केवल एक मै. एमएफपीएल फ्लोरिंग से प्राप्त हुआ था और बाद में अन्य आयातक/प्रयोक्ता, मै. फ्लाराइड्स एंड केमिकल्स, पुडुचेरी से प्राप्त हुआ था, जिस पर आरंभिक कमियों को दूर करने के बाद विचार किया गया था । मै. ओवरसीज केमटेक ने भी जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर दिया और जांच में शामिल करने की मांग की किन्तु उनके द्वारा किए गए अनुरोधों से यह पता चलता है कि वे जांच अवधि के बाद ही निगमित हुए थे और कोई आयात नहीं किया था । अतः उक्त पार्टी पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ग) के अंतर्गत किसी हितबद्ध पार्टी की अर्हता नहीं रखती है ।

- (vii) जांच शुरुआत संबंधी सूचना की प्रतियां व्यापक परिचालन हेतु फिक्की, सीआईआई, एसोचेम, एक्साइज लॉ टाइम्स आदि को भी भेजी गई थी ।
- (viii) पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरों की व्यवस्था करने के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से अनुरोध किया गया था ।
- (ix) पाटन एवं क्षति की जांच में 1 अप्रैल, 2005 से 30 सितंबर, 2006 की अवधि (जिसे जांच अवधि भी कहा गया है) शामिल थी । क्षति विश्लेषण के संदर्भ में रुझानों की जांच में 1 अप्रैल, 2002 से जांच अवधि की समाप्ति तक की अवधि (जिसे क्षति अवधि ही कहा गया है) शामिल थी ।
- (x) प्राधिकारी ने पाटन एवं परिणामी क्षति के निर्धारण के प्रयोजनार्थ आवश्यक समझी गई समस्त सूचना मांगी और उसका सत्यापन किया । प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जांच की । उत्पादन लागत और भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत को निकालने के लिए

आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के अनुसार विश्लेषण भी किया गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।

- (xi) हितबद्ध पार्टियों की मौखिक सुनवाई करने के लिए प्राधिकारी ने एक सार्वजनिक सुनवाई 25 अक्टूबर, 2007 को और दूसरी सुनवाई, 21 नवंबर, 2007 को आयोजित की । इस सुनवाई में घरेलू उद्योग के प्रतिनिधि तथा आयातक उपस्थित हुए थे । भागीदार पार्टियों से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित अनुरोध दायर करने का आग्रह किया गया था जिन अनुरोधों पर प्राधिकारी ने मै. ओवरसीज केमटेक के अनुरोधों को छोड़कर इस जांच परिणाम में विचार किया है ।
- (xii) सभी हितबद्ध पार्टियों को मामले के आवश्यक तथ्यों का खुलासा गोपनीय और सामान्य प्रकटन के रूप में किया गया था । प्रकटन विवरण पर हितबद्ध पार्टियों की टिप्पणियों पर उस सीमा तक जिस सीमा तक वह संगत और साक्ष्य द्वारा समर्थित हैं, प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है ।
- (xiii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय रूपांतरण को प्राधिकारी द्वारा रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखा और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा । *** यह चिन्ह इस अधिसूचना में किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार गुणदोष के आधार पर उसे गोपनीय ही माना है ।

ग. विचाराधीन उत्पाद एवं "समान"वस्तु

6. मूल जांच में यथापरिभाषित वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद चीन जन.गण. के मूल के या वहां से निर्यातित सभी स्वरूपों, शुद्धताओं और सांद्रणों वाला हाइड्रोफ्लोरिक एसिड है । हाइड्रोफ्लोरिक (या एचएफ) एसिड तरल या गैस तथा एनहाइड्रस या जलीय/तनुकारी रूप में हो सकता है । इसका उपयोग गैसोलिन अल्कीलेशन हेतु, अकार्बनिक फ्लोराइड्स, फ्लूरीनेटिड हाइड्रोकार्बन योगिकों, रेफरीजरेंटों के विनिर्माण में स्टेनलेस स्ट्रिप्स तथा उच्च सिलिकन शीटों, ग्लास एचिंग आदि को आकार देने हेतु एक पिकलिंग एजेंट के रूप में किया जाता है । प्रयुक्त कच्ची सामग्रियां एसिड ग्रेट फ्लूरोस्फोर, सल्फ्यूरिक एसिड तथा ओलियम हैं, जिन्हें पूर्व निर्धारित दरों से प्रीरिएक्टर में डाला जाता है, मिलाया जाता है और उसे समघर्मी मिश्रण में परिवर्तित किया जाता है एवं एचएफ एसिड रिएक्टर में पहुंचा दिया जाता है । परिणामी एचएफ गैस को धुलाई हेतु प्री स्कर्विंग टावर ले जाया जाता है और तत्पश्चात इसे प्रशीतित कैल्सियम क्लोराइड मिश्रण का उपयोग करते हुए संघनित किया जाता है । तत्पश्चात तरल पदार्थ को निथारण द्वारा शुद्ध किया जाता है और एनहाइड्राइड उपोत्पाद को अलग से प्राप्त किया जाता है । एचएफ एसिड की बिक्री 20% से 70% तक के तनुकारी सांद्रणों में की जाती है

जिन्हें इन जांच परिणामों में एचएफ-20% से एचएफ-70% या 100% शुद्ध एनहाइड्रस अर्थात् एचएफ-100% के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

7. हाइड्रोफ्लूरिक एसिड एक अकार्बनिक रसायन है जो सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28, सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के सीशु. उपशीर्ष 281111 तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार वर्गीकरण के अंतर्गत वर्गीकृत है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच जो कि एक निर्णायक समीक्षा जांच है और इसका क्षेत्र विस्तार मूल जांच में पहले से अभिज्ञात उत्पाद तक सीमित है, के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु का उपयोग संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु से अदल-बदल कर किया जाता है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि ये दोनों निष्पत्तियों के अर्थ के भीतर "समान वस्तुएं" हैं।

घ. घरेलू उद्योग का आधार

8. निर्णायक समीक्षा घरेलू उद्योग की ओर से मै. टेनफेक इंडस्ट्रीज लि., कुड्डालोर द्वारा प्रस्तुत विधिवत पुष्टिकृत अनुरोध के आधार पर शुरू की गई है जिसका समर्थन मै. नवीन फ्लूरीन इंटरनेशनल लि., मुंबई द्वारा किया गया है। याचिकाकर्ता और समर्थक संबद्ध उत्पाद के केवल मर्चेंट विक्रेता हैं। एचएफ एसिड के दो अन्य उत्पादक अर्थात् मै. गुजरात फ्लूरीन और मै. एसआरएफ लि. द्वारा उत्पाद की आबद्ध खपत की जाती है। दोनों ने जांच अवधि में उत्पाद का आयात किया था, मै. एसआरएफ लि. ने एचएफ 100% का पर्याप्त मात्रा में आयात किया था। अतः मै. गुजरात फ्लोरी और मै. एसआरएफ को पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाता है। प्राधिकारी का मानना है कि वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ मै. टेनफेक इंडस्ट्रीज तथा मै. नवीन फ्लोरिंग घरेलू उद्योग हैं।

ड. हितबद्ध पार्टियों के विचार

9. हितबद्ध पार्टियों के विचारों को इस जांच परिणाम में उचित स्थानों पर समाविष्ट किया गया है परंतु सामान्य स्वरूप के विचार निम्नानुसार हैं :

(क) याचिका की स्वीकार्यता के बारे में

10. सहयोगी आयातकों ने यह तर्क दिया है कि याचिकाकर्ता का उत्पादन घरेलू उद्योग का, एक बड़ा भाग नहीं बनता है और यदि घरेलू उद्योग की सभी चार इकाइयों की कुल उत्पादन क्षमता पर विचार किया जाए तो घरेलू उत्पादन 50% से अधिक नहीं बनता है। टेनफेक, नवीन फ्लोरिंग और एसआरएफ लि. के उत्पादन के एक भाग की ही बिजली एचएफ के रूप में की जा रही थी और याचिकाकर्ता ने यह दावा किया है कि एसआरएफ द्वारा अपने समस्त उत्पादन की आबद्ध खपत की जा रही है, सही नहीं है। अतः याचिका रद्द कर दी जानी चाहिए। इसके उत्तर में घरेलू उद्योग ने यह उल्लेख किया है कि याचिकाकर्ता संबद्ध वस्तु का

प्रमुख घरेलू उत्पादक है और वह नियमों के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग है । इसके अलावा जांच शुरुआत के बाद नवीन फ्लोरिंग ने पूर्ण सूचना उपलब्ध कराई है । दोनों का उत्पादन मर्चेन्ट बाजार हेतु समग्र घरेलू उत्पादन बनता है । एसआरएफ तथा गुजरात फ्लोरिंग की संयुक्त क्षमता 20 टीएमटी से कम है और वह केवल आबद्ध खपत के लिए है । यदि उनके उत्पादन को शामिल किया जाता है तो याचिकाकर्ताओं का उत्पादन 50% से अधिक बन जाता है । प्राधिकारी ने यह पाया है कि याचिकाकर्ताओं का हिस्सा संयुक्त रूप से घरेलू उद्योग के 70% के अधिक बनता है जबकि अन्य दो इकाइयों ने जांच अवधि में संबद्ध उत्पाद का आयात किया है और इसलिए वे घरेलू उद्योग का भाग नहीं हैं ।

(ख) शुल्क लागू किए जाने के बारे में

11. आयातकों ने दावा किया है कि पाटनरोधी शुल्क उस उत्पाद पर लागू नहीं किया जा सकता जो मूल जांच में शामिल नहीं है और यह तर्क कि एचएफ-70% का आयात शुल्क बचाने के लिए किया जा रहा था, अस्वीकार्य है । उन्होंने आगे यह बताया है कि जब एचएफ-70% की समीक्षा पाटित वस्तु के रूप में नहीं की गई थी तो समीक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि उत्पाद के तकनीकी गुणधर्मों में परिवर्तन नहीं हुआ है । इसके अलावा यद्यपि एचएफ-70 % पर शुल्क लागू था, तथापि पहुंच मूल्य काफी अधिक था और उस पर शुल्क लागू नहीं किया जाना चाहिए था । घरेलू उद्योग ने उत्तर दिया है कि किसी समीक्षा में प्राधिकारी को शुल्क लगाने के लिए पाटन मार्जिन का पुनर्निर्धारण करना होता है और समीक्षा से एचएफ 70% को बाहर रखने से उसके आयात द्वारा शुल्क अपवंचन में सुविधा होगी और उत्पाद के दायरे में एचएफ 70% को लाए जाने से उत्पाद क्षेत्र में विस्तार नहीं होगा । प्राधिकारी ने नोट किया कि मूल जांच में विचाराधीन उत्पाद समग्र एचएफ एसिड है ।

(ग) घरेलू उद्योग की अपर्याप्त क्षमता और आबद्ध खपत के बारे में

12. आयातकों ने दावा किया है कि याचिकाकर्ताओं की उत्पादन क्षमता एचएफ एसिड की 30-40 टीएमटी वार्षिक है, जिसमें से 85-90% का उपयोग मूल्यवर्धित उत्पादों का उत्पादन करने के लिए आबद्ध रूप में किया जाता है । उत्पादन की अत्यंत अल्प मात्रा की बिक्री घरेलू तथा निर्यात बाजारों में विभिन्न सांद्रणों में एचएफ एसिड के रूप में की गई थी । याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित समस्त मात्रा की खपत पण्य बिक्री हेतु किसी मात्रा को उपलब्ध किए बिना आबद्ध रूप से की जा सकती है । निगमित होने के बाद याचिकाकर्ता को एचएफ के आबद्ध उपयोग के साथ केवल एल्यूमिनियम फ्लोराइड के विनिर्माण हेतु लाइसेंस प्रदान किया गया था, किन्तु पांच वर्ष बाद कंपनी ने क्षमता बढ़ाए बिना मर्चेन्ट बिक्री के लिए उत्पादित एचएफ एसिड के एक भाग को परिवर्तित कर दिया । इस प्रकार, बिक्री हेतु संबद्ध उत्पाद की उपलब्धता मूल्यवर्धित उत्पादन के लिए आर्डरों पर निर्भर है । क्षमता एवं उत्पाद की उपलब्धता के स्पष्ट निर्धारण के अभाव में याचिकाकर्ता के उत्पादन को कुल घरेलू उत्पादन में शामिल नहीं किया जाना चाहिए । इसके अलावा, उस मामले में विचित्र स्थिति उत्पन्न हो सकती है जिसमें संयंत्र का क्षमता उपयोग 100% तो हो सकता है, लेकिन उत्पाद की उपलब्धता 0% हो सकती है ।

अतः उपलब्धता की मात्रा का पता लगाए बिना क्षमता पर कोई विचार-विमर्श निरर्थक होगा। इसके अलावा, घरेलू इकाइयों में से एक इकाई ने बिक्री मात्रा 500 मी.टन से घटाकर 150 मी.टन कर दी जिससे बाजार में कमी उत्पन्न हो गई और उसने अपनी खपत हेतु एनहाइड्रस एचएफ एसिड का आयात किया। संबद्ध उत्पाद की भारी कमी और पिछले 12 महीनों में चीन की कीमतें दोगुनी हो जाने के कारण निविष्टि की कीमतों में वृद्धि हुई जिसके परिणामस्वरूप अनुषंगी उद्योग बंद हो गए और रोजगारों में कमी आ गई। घरेलू उद्योग ने इस बात की पुष्टि करते हुए इस तर्क का खंडन किया है कि चीन से पाटन के कारण वे मांग में वृद्धि होने के बावजूद अपनी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं कर रहे हैं। शुल्क लगाए जाने से पाटन द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, ह्रास रुकेगा और उपभोक्ता के लिए व्यापक बिकल्प की उपलब्धता बनी रहेगी।

(घ) अनेक लघु इकाइयों के लिए कच्ची सामग्री के रूप में एचएफ एसिड के बारे में

13. आयातकों ने दावा किया है कि एचएफ प्रयोक्ता लघु क्षेत्र में हैं और वे याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित व्युत्पत्तियों के समान व्युत्पत्तियों का उत्पादन करते हैं जो बाजार में एचएफ की उपलब्धता नियंत्रित कर सकते हैं और प्रयोक्ताओं को आपूर्ति बंद कर सकते हैं। यदि आयातों की अनुमति नहीं दी जाएगी तो लघु उद्योग प्रयोक्ताओं को बंदी का सामना करना पड़ेगा। इसके अलावा, चूंकि आयात का प्रतिशत कुल उत्पादन की तुलना में नगण्य है, इसलिए बड़े विनिर्मातकों को कोई क्षति नहीं हुई है, जैसाकि उनके आर्थिक मापदंडों से देखा जा सकता है। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि इस बात को मानने का कोई कारण नहीं है कि भारतीय उत्पादन उपभोक्ताओं को सामग्री की आपूर्ति नहीं करेंगे क्योंकि क्षमता की स्थापना उत्पादन और बिक्री के लिए की गई है।

(ङ) याचिकाकर्ता का निर्यात और घरेलू बिक्री के संबंध में

14. आयातकों ने आरोप लगाया है कि याचिकाकर्ता एफ एसिड तथा अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों का निर्यात घरेलू बिक्री कीमत से काफी अधिक कीमतों पर करते हैं। इस प्रकार यद्यपि, उत्पादन लागत काफी कम थी, तथापि उत्पाद की बिक्री अच्छी आय पर की गई थी। निर्यात कीमत से स्पष्ट तौर पर यह पता चलता है कि घरेलू उत्पादक वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धा कर सके और उनके लिए किसी रक्षोपाय की जरूरत नहीं है। घरेलू उद्योग ने उल्लेख किया है कि जिस कीमत पर उन्हें निर्यात करने के लिए बाध्य होना पड़ा, वह कीमत क्षति या पाटन के निर्धारण हेतु कोई उचित मापदंड नहीं है।

(च) फ्लूटस्पार पर शून्य शुल्क और कम विनिमय दरों के बारे में

15. आयातकों ने आरोप लगाया है कि मूल कच्ची सामग्री पर शुल्क 5 वर्ष के भीतर घटाकर शून्य कर दिया गया और डॉलर-रुपया विनिमय दर उस समय कम थी। अंतर्राष्ट्रीय कीमत पर कच्ची सामग्री उपलब्ध हो जाने से घरेलू उद्योग को उस समय किसी रक्षोपाय की जरूरत नहीं थी जब वह समान प्रतिस्पर्धा के अवसर प्राप्त कर रहा था। घरेलू उद्योग ने यह

बताया है कि याचिकाकर्ताओं द्वारा खर्च की गई कच्ची सामग्री की वास्तविक कीमत के आधार पर विचारित क्षति संबंधी मापदंडों में शुल्क दर तथा विनिमय दर में समस्त परिवर्तनों को स्वतः हिसाब में ले लिया जाता है ।

(छ) एचएफ एसिड 70% और 70% से कम के बीच कीमत अंतर के बारे में

16. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि चीन के उत्पादकों ने एचएफ 70% और अन्य सांद्रणों के बीच पूर्ववर्ती उत्पाद पर शुल्क के अभाव के कारण कीमत में अंतर रखा और शुल्क समाप्त किए जाने से अन्य सांद्रणों का पर्याप्त मात्रा में निर्यात किया जाएगा । तथापि, आयातकों ने इस दावे का खंडन किया है क्योंकि जब कीमतें एचएफ-100% आधार पर परिवर्तित की गई थीं, तो वे समान स्तर पर थीं । घटी हुई पैकिंग लागत, भाड़ा लाभ आदि के कारण एचएफ 70% की कीमत सस्ती निर्धारित की गई थी और उसका आयात केवल वास्तविक प्रयोक्ताओं तथा अनुषंगी उत्पाद विनिर्माताओं, जिनके पास उसकी हैंडलिंग और उपयोग में आवश्यक विशेषज्ञता थी, द्वारा किया गया था । विशेषज्ञता के अभाव के कारण एचएफ एसिड के व्यापारी केवल एचएफ-60% का आयात करते हैं ।

(ज) पाटन का जारी रहना

17. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9क(1)(ग) के अधीन,

"किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का तात्पर्य है :

- (i) व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में सामान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उपनियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा
- (ii) जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा :-
 - (क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो; अथवा
 - (ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उद्गम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत;

किंतु यदि उक्त वस्तु का आयात उद्गम वाले देश से भिन्न किसी देश से किया गया है और जहां उक्त वस्तु का निर्यात के देश से होकर केवल आन्तरिक किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में नहीं होता है अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में उसकी कीमत के संबंध में किया जाएगा।"

18. प्राधिकारी ने धारा 9क(1)(ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ समस्त ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजीं। चीन जन.गण. के किसी भी निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया।

च.1 चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण

च.1.1 हितबद्ध पार्टियों के विचार

(क) चीन के आपूर्तिकर्ताओं द्वारा पाटन न किए जाने के बारे में

19. आयातकों ने दावा किया है कि चीन के आपूर्तिकर्ताओं ने भारत में सामान्य मूल्य से अधिक और उचित कीमत पर ही निर्यात किया है और बाजार निर्धारित कीमतों पर बिक्री की है जैसा कि आयाजित एचएफ एसिड की कीमत में सतत वृद्धि से देखा जा सकता है। कोई पाटन नहीं हुआ है किन्तु घरेलू उत्पादकों ने निविष्टियों की लागत में आनुपातिक वृद्धि किए बिना अपनी कीमतें असामान्य रूप से बढ़ा दीं। ऐसे किसी एकाधिकार और प्रतिस्पर्धात्मक व्यापार व्यवहार से लघु उद्योग की सुरक्षा करने का एकमात्र तंत्र आयातों की अनुमति देना था। घरेलू उद्योग ने यह कहते हुए इन तर्कों को आधारहीन और औचित्य रहित बताते हुए खारिज कर दिया कि ऐसी घिताओं के निवारण हेतु देश के भीतर पर्याप्त कानूनी तंत्र है।

(ख) पाटन मार्जिन के बारे में

20. घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि चूंकि संबद्ध देश के किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है, इसलिए उन्हें असहयोगी माना जाए और निर्दिष्ट प्राधिकारी नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर जाँच परिणाम दर्ज करें। इसके अलावा निर्यातकों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था (एनएमई) स्थितियों के अंतर्गत सहयोगी माना जाए। तथापि, आयातकों ने यह दावा किया है कि निर्यातक के उत्तर के अभाव से पाटन में चीन के निर्यातकों की अनिच्छा का पता चलता है क्योंकि उनकी खुद की सरकारी नीति द्वारा निर्यात पहले से ही प्रतिबंधित हैं। उनका तर्क है एसिड ग्रेड फ्लूस्फोर को एक प्रमुख कच्ची सामग्री मानकर चीन ने अपनी निर्यात उपलब्धता को घटाकर वर्ष 2002 से 2010 तक कच्ची सामग्री का निर्णय लिया जिसके लिए कच्ची सामग्री और तैयार उत्पाद हेतु निर्यात प्रतिबंध लगाया, दिसंबर, 2006 से 13% निर्यात सब्सिडी समाप्त कर दी और फ्लूस्फोर पर 10% सीमाशुल्क और निर्यात कर लगाया। वाणिज्य मंडल द्वारा प्रमाणित और चीनी दूतावास

द्वारा पृष्ठांकित अति प्रयोक्ता प्रमाण पत्र को आयातकों द्वारा निर्यातक को प्रेषित करना होगा ताकि वे निर्यात लाइसेंस प्राप्त कर सकें। डॉलर के मुकाबले आरएमबी की मजबूती से भी एचएफ एसिड की कीमत में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, यद्यपि चीन में कई एचएफ एसिड उत्पादक हैं, तथापि केवल 2-3 कंपनियां निर्यात करती हैं क्योंकि घरेलू खपत वृद्धि हुई है और कोई बेशी मात्रा नहीं बची है। इसके परिणामस्वरूप भारत को प्रति मी.टन निर्यात कीमत में वृद्धि हुई जो वर्ष 2004-05 में 600-645 डॉलर से बढ़कर अप्रैल-नवंबर, 06 में 645-700 डॉलर, दिसंबर, 06-अप्रैल, 07 में 730-790 डॉलर और मई-अक्टूबर, 07 में 950-990 डॉलर को गई और नवंबर, 07 में बढ़कर 1067 डॉलर हो गई। जब चीन एचएफ निर्यातों को हतोत्साहित कर रहा है तो पाटनरोधी शुल्क लगाने की कोई जरूरत नहीं है। इसके अलावा, पिछले दो वर्ष से चीन के डब्ल्यूटीए करार का सदस्य होने के कारण कीमतें बाजार कीमतों के समतुल्य थीं और इससे बाजार अर्थव्यवस्था का पता चलता है।

(ग) आयातों की उत्तम गुणवत्ता के संबंध में

21. आयातकों में से एक आयातक ने यह दावा किया है कि उन्होंने दक्षिण भारत में एचएफ विनिर्माण संयंत्र की सर्वप्रथम स्थापना की है, तथापि उन्हें याचिकाकर्ता और अन्य बड़े विनिर्माताओं से प्रतिस्पर्धा के कारण उत्पादन स्थगित करने के लिए बाध्य होना पड़ा। उन्होंने चीनी उत्पाद की गुणवत्ता उच्चतर होने के कारण उत्पाद का आयात किया जिसकी अशुद्धता का स्तर काफी कम था, उनकी तैयार वस्तु में उच्च गुणवत्ता थी। घरेलू उद्योग ने गुणवत्ता में किसी अंतर का खंडन किया है और गुणवत्ता उत्तम होने की स्थिति में चीन के आयातों की कम कीमत होने की तर्कसंगतता पर प्रश्न चिन्ह लगाया है।

22. घरेलू उद्योग ने अमरीका में प्रचलित एचएफ-100% की कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है, जिसे संबद्ध वस्तु का प्रमुख वैश्विक उत्पादक बताया जाता है। विकल्पतः घरेलू उद्योग ने बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय तथा उचित लाभ हेतु समायोजित अपनी उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है।

च.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

23. प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों के तर्कों और प्रति तर्कों को नोट किया है और इन मुद्दों पर इस जांच परिणाम में उचित स्थानों पर विचार किया गया है।

सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9क(5) में यह उपबंध है कि किसी निर्णायक समीक्षा में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या ऐसे शुल्क को समाप्त किए जाने से पाटन और क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। अतः प्राधिकारी के समक्ष इस बात की जांच करने के मुद्दे हैं कि क्या निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने या उसे समाप्त करने की अनुमति देने की स्थिति में :

- ❖ पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है;
 - ❖ घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है;
- इन पर आगामी पैराग्राफों में विचार किया गया है।

च.2.1 सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत

24. प्राधिकारी ने नोट किया कि संबद्ध देश के किसी भी निर्यातक ने न तो सूचना उपलब्ध कराई और न ही जांच में सहयोग किया ताकि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण किया जा सके। अतः प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के असहयोगी निर्यातकों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया है। करार के अनुच्छेद 6.8 के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है। जांच अवधि के लिए इस जांच के प्रयोजनार्थ अपनाई गई औसत विनिमय दर 44.99 रूपए प्रति डॉलर थी।

च.2.1.1 सामान्य मूल्य

25. प्राधिकारी ने उचित लाभ मार्जिन के साथ भारत में घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, परिवर्तन लागत और बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है। इस प्रकार परिकलित सामान्य मूल्य *** रूपए या *** डॉलर प्रति मी.टन बनता है।

च.1.2.2 निर्यात कीमत

26. प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन तथा कीमत कटौती की गणना हेतु सरकारी कीमत को लिया है। संबद्ध उत्पाद के लिए भारत हेतु सांद्रण-वार निर्यात कीमत की भारित औसत निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है। भाड़े, बीमा, कमीशन तथा हैंडलिंग व्यय जैसे समायोजनों की परंपरानुसार अनुमति दी गई है। भारित औसत निर्यात कीमत *** रूपए या *** डॉलर प्रति मी.ट. ली गई है और समायोजनों के बाद कारखाना निर्यात कीमत *** रूपए या *** डॉलर प्रति मी.ट. बनती है।

च.2.2 चीन-जन.गण के लिए पाटन मार्जिन

	रु./मी.टन	अम.डॉ. /मी.टन
सीएनवी	***	***
निवल ईपी	***	***
पाटन मार्जिन	***	***
पाटन मार्जिन %	21.22	

27. चीन जन.गण. के लिए पाटन मार्जिन काफी अधिक पाया गया था ।

छ. क्षति तथा कारणात्मक संबंध : क्षति का जारी रहना

28. पाटनरोधी नियमावली का नियम 11 निम्नानुसार है :

क्षति का निर्धारण:

- (1) विनिर्दिष्ट देशों से आयातों के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी आगे इस आशय का एक जांच परिणाम दर्ज करेंगे कि भारत में ऐसी किसी वस्तु के आयात से किसी स्थापित उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है या क्षति होने का खतरा उत्पन्न हो गया है या उससे भारत में किसी उद्योग की स्थापना में वास्तविक बाधा उत्पन्न हुई है ।
- (2) निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमत पर उसके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति, घरेलू उद्योग को क्षति के खतरे, घरेलू उद्योग की स्थापना के लिए वास्तविक बाधा और पाटित आयातों तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का निर्धारण किया जाएगा और इन नियमों के अनुबंध-॥ में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार"

29. नियमों के अनुबंध ॥ में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और ; (ख) पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होगी । नियमावली के अनुबंध-॥(॥) में निम्नानुसार उपबंध है :-

(॥) पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है । जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।"

नियमावली के अनुबंध-॥ में आगे यह उपबंध है कि

"(॥). संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित

गिरावट, सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, ऋणी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

छ.1 हितबद्ध पार्टियों के विचार

30. आयातकों ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है क्योंकि आयात अत्यंत कम अनुपात में हुए हैं और ये कुल उत्पादन तथा घरेलू मांग की तुलना में नगण्य हैं। आयातों का मुख्य कारण घरेलू उद्योग द्वारा अपेक्षित मात्रा और गुणवत्ता में तथा समय पर आपूर्ति करने में असमर्थ रहना रहा है। कच्ची सामग्री का आयात 0% शुल्क पर किया जा रहा है और लागत में वृद्धि की भरपाई रुपया-डॉलर दर की मजबूती द्वारा हो गई है। इसके अलावा, याचिकाकर्ताओं की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार कच्ची सामग्री की लागत में वृद्धि के बावजूद किसी संगत मापदंड पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है। इसके अलावा, 3 माह की अवधि में घरेलू उद्योग की एचएफ-70% की कीमत में 10,500 रुपये प्रति मी.टन की वृद्धि हुई है जिससे एकाधिकार, प्रतिस्पर्धारोधी और उपभोक्तारोधी मनःस्थिति का पता चलता है। तथापि घरेलू उद्योग ने आयातों से क्षति का दावा किया है।

छ.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

31. प्राधिकारी ने विभिन्न पार्टियों द्वारा अपने अनुरोधों में दिए गए तर्कों को नोट किया है और पाटन तथा घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना के मुद्दे की जांच प्राधिकारी के समक्ष दिए गए तर्कों के आलोक में की गई है।

32. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों की मात्रा और कीमत संबंधी प्रभावों और कीमत तथा उपलब्धता पर उसके प्रभाव की जांच की है। क्षति एवं पाटन तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, की मौजूदगी की जांच करने के लिए समूचे निर्यातों को क्षति विश्लेषण एवं कारणात्मक संबंध की जांच के प्रयोजनार्थ पाटित आयात माना गया है क्योंकि संबद्ध देशों से हुए आयातों के लिए सकारात्मक पाटन मार्जिन स्थापित किया गया है।

क. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

आयात के आंकड़े

33. डीजीसीआईएंड एस के सौदेवार आंकड़ों से यह पता चलता है कि सीमाशुल्क वर्गीकरण अध्याय- 28111100 के अंतर्गत संबद्ध उत्पाद का आयात होने की सूचना दी गई है। चूंकि उत्पाद विवरण केवल सांकेतिक है, इसलिए मात्रा, मूल्य और औसत आयात कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ संबद्ध वस्तु के सभी आयातों को शामिल किया गया है, भले ही

उसका वर्गीकरण कुछ भी हो । आयात मुख्यतः एचएफ-70% के किए गए हैं किन्तु जांच अवधि में एच एफ 60% तथा एचएफ 100% के आयात की सूचना दी गई है । अन्य सांद्रणों का आयात किसी खास मात्रा में नहीं किया गया है । चीन जन.गण. से आयात मुख्यतः एचएफ 70% के हुए हैं ।

एचएफ एसिड का आयात	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
कुल आयातित उत्पाद				
मात्रा (मी.ट.)	307	1035	427	1669
मूल्य (लाख रुपए)	102.81	248.30	124.25	602.59
कीमत/मी.टन	33446	23981	29099	36098
संबद्ध देश से आयात				
मात्रा (मी.ट.)	शून्य	564	417	1616
मूल्य (लाख रुपए)	शून्य	121.26	116.58	502.49
कीमत/मी.टन		21495	27953	31095
कुल आयातों में हिस्सा	0	54%	98%	97%
अन्य देशों से आयात				
मात्रा (मी.ट.)	307	471	10	53
मूल्य (लाख रुपए)	102.81	127.05	7.67	100.10
कीमत/मी.टन	33446	26955	77149	187706

स्रोत: डीजीसीआईएस के आंकड़े

याचिकाकर्ता द्वारा सूचित आयात के आंकड़ों को निम्नानुसार देखा जा सकता है :

मात्रा (मी.ट.)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
डीजीसीआईएस के आंकड़े	शून्य	564	398	1026
आईबीआईएस आंकड़े	324	949	1083	1514

34. प्राधिकारी ने नोट किया कि वर्ष 2002-03 में डीजीसीआईएस के आंकड़ों में संबद्ध देश से शून्य आयातों की सूचना दी गई है किन्तु वर्ष 2003-04 से यह प्रतिशत उत्पाद के कुल आयातों का 54% था और परवर्ती वर्षों में यह 96-97% हो गया । अन्य देशों से आयातों के मामले में औसत कीमतों से संबंधित आंकड़े प्रथम दृष्टया अविश्वसनीय प्रतीत होते हैं । दूसरी ओर वर्ड ट्रेड एटलस से प्राप्त आंकड़ों में चीन सीमाशुल्क द्वारा सूचित एचएफ के चीन के निर्यातों का निम्नानुसार पता चलता है :

चीन - हाइड्रोजन फ्लूराइड का कुल निर्यात

मात्रा मी.टन में					निर्यात का मूल्य लाख रुपये में			
देश	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
जापान	5432	19952	40712	90815	1777.39	6199.65	11839.87	27551.44
भारत	324	594	523	1881	71.71	120.02	124.95	492.78
सिंगापुर	574	879	2646	6309	180.80	268.73	756.26	1772.40
कोरिया	4144	5501	6987	22904	824.98	1004.94	1570.36	8204.20
थाइलैंड	2735	2566	3400	3577	537.75	580.87	840.99	968.58
टर्की	448	754	1338	2906	100.28	172.05	322.34	727.29
ब्राजील	178	1392	1262	4143	40.73	261.41	277.57	1047.74
यूएसए	342	1013	962	2905	63.44	234.46	207.75	728.90
ताइवान	11382	13977	12614	23773	1682.17	2363.76	2386.15	4956.14
मलेशिया	1855	2359	2367	2490	302.46	370.45	449.81	528.63
संसार	29775	51588	75183	166270	6112.86	12121.43	19366.87	48177.68

आंकड़ों का स्रोत: वर्ल्ड ट्रेड एटलस में यथासूचित चीन सीमाशुल्क

35. क्षति अवधि के लिए डब्ल्यू टीए आंकड़ों से यह पता चलता है कि चीन द्वारा संबद्ध उत्पादों के निर्यात कई देशों मुख्यतः जापान को किया गया है जिसका हिस्सा जांच अवधि के दौरान कुल निर्यातों में 55% है, ताइवान और कोरिया गणराज्य (14%) जिनके बाद सिंगापुर, ब्राजील और भारत जैसे देश आते हैं, जिनका हिस्सा क्रमशः 4%, 2.5% और 1% है। चीन के कुल निर्यातों के प्रतिशत के रूप में भारत का हिस्सा अत्यंत नगण्य है। भारत को हुए निर्यातों का मूल्य जांच अवधि में वार्षिक 1% से अधिक है जिससे मात्रा में प्रवृत्ति का पता चलता है जबकि जापान का स्थान सर्वोपरि है, उसके बाद दक्षिण कोरिया व ताइवान का स्थान आता है।

प्रवृत्ति मात्रा में					कुल निर्यात में हिस्सा (%)			
देश	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
जापान	100	367	750	1672	18.24	38.68	54.15	54.62
भारत	100	183	161	580	1.09	1.15	0.70	1.13
सिंगापुर	100	153	461	1099	1.93	1.70	3.52	3.79
कोरिया	100	133	169	553	13.92	10.66	9.29	13.77
थाइलैंड	100	94	124	131	9.19	4.97	4.52	2.15
टर्की	100	168	299	649	1.50	1.46	1.78	1.75
ब्राजील	100	784	710	2333	0.60	2.70	1.68	2.49
यूएसए	100	297	282	851	1.15	1.96	1.28	1.75
ताइवान	100	123	111	209	38.23	27.09	16.78	14.30
मलेशिया	100	127	128	134	6.23	4.57	3.15	1.50
संसार	100	173	253	558	100.00	100.00	100.00	100.00

आंकड़ों का स्रोत: वर्ल्ड ट्रेड एटलस में यथासूचित चीन सीमाशुल्क

36. प्रवृत्ति की संगणना से यह पता चलता है कि भारत को हुए निर्यातों में लगभग 3 गुना वृद्धि हुई है जो वर्ष 2004-05 में 161 से बढ़कर जांच अवधि में 580 हो गए हैं किन्तु क्षति

अवधि के दौरान कुल निर्यातों में भारत का हिस्सा 0.70-1.15% के बीच रहा है। गिने-चुने देशों को छोड़कर जांच अवधि में अन्य देशों को हुए निर्यात की मात्रा में वृद्धि हुई है।

औसत कीमत/ मी.टन (रुपए)					प्रवृत्ति इकाई मूल्य में			
देश	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
जापान	32723	31073	29082	30338	100	95	89	93
भारत	22110	20207	23911	26195	100	91	108	118
सिंगापुर	31499	30590	28579	28091	100	97	91	89
कोरिया	19909	18270	22475	27088	100	92	113	136
थाइलैंड	19661	22639	24736	27078	100	115	126	138
टर्की	22387	22825	24093	25031	100	102	108	112
ब्राजील	22932	18785	22000	25289	100	82	96	110
यूएसए	18573	23140	21586	25089	100	125	116	135
ताइवान	14779	16912	18917	20848	100	114	128	141
मलेशिया	16301	15704	19000	21229	100	96	117	130
संसार	20530	23497	25760	27773	100	114	125	135

आंकड़ों का स्रोत: वर्ल्ड ट्रेड एटलस में यथासूचित चीन सीमाशुल्क

37. क्षति अवधि के दौरान भारत को हुए निर्यातों की प्रति मी.ट. औसत कीमत 20000-26000 रुपए के बीच रही है। वर्ष 2002-03 को छोड़कर अन्य सभी वर्षों में यह दर औसत विश्व दरों से कम रही है, यद्यपि अमरीका, ताइवान और मलेशिया को आयात औसत भारतीय दर से कम कीमत पर किए गए हैं। इसके अलावा, कीमत उतार-चढ़ाव के बावजूद कीमत में वृद्धि की प्रवृत्ति महत्वपूर्ण रही है भले ही वो धीमी गति से हुई हो, जिसका तात्पर्य यह है कि अन्य देशों की तुलना में निर्यातों की मात्रा मामूली न रही होती तो घरेलू बाजार के एक बड़े हिस्से को हड़पने का प्रयास किया गया होता।

(रुपए प्रति मी.टन में)

एचएफ एसिड का आयात	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
डीजीसीआईएंडएस (1)	शून्य	21495	27953	31095
डक्यूटीए (2)	22110	20207	23911	26195
अंतर (1) - (2)		1288	4042	4900

38. निम्नलिखित विश्लेषण में वर्ल्ड ट्रेड एटलस के आंकड़ों का उपयोग आयातों की मात्रा एवं घरेलू मांग के निर्धारण में किया जाता है। तथापि पहुंच कीमत की संगणना हेतु डीजीसीआईएंडएस के सौदेवार आंकड़ों का उपयोग एनहाइड्रस रूप में व्यक्त आयातों की सांद्रणवार मात्रा के साथ किया जाता है।

(क) आयात की मात्रा

39. जहां तक पाटित आयातों के मूल्य का संबंध है, इस बात की जांच की गई है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

40. संबद्ध वस्तु की घरेलू खपत/मांग की गणना करने के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा को भारत में हुए कुल आयातों में जोड़ा है।

मापक (मी. टन में)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि ¹
कुल आयात	632	1065	533	1290
सूचीबद्ध	100	169	84	204
संबद्ध देशों से आयात	324	594	523	1254
सूचीबद्ध	100	183	161	387
अन्य देशों से आयात	307	471	10	36
सूचीबद्ध	109	153	3	12
घरेलू उद्योग की बिक्री	5707	4804	5309	6122
सूचीबद्ध	100	84	93	107
आबद्ध खपत	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	105	100	118
अन्य घरेलू उत्पादों की बिक्री	2200	2200	2200	2200
घरेलू मांग	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	101	98	116
घरेलू उत्पादन	***	***	***	***

नोट: ¹ : बंधानुपात आधार पर वार्षिकीकृत

स्रोत: घरेलू उद्योग, डीजीसीआईएस।

41. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू मांग (सूचीबद्ध) में क्षति अवधि के दौरान 116 से अधिक की वृद्धि हुई जबकि घरेलू बिक्री में 107, आबद्ध खपत में 118 और कुल आयातों में 204 की वृद्धि हुई। साथ ही साथ संबद्ध देशों के आयातों में इसी अवधि के दौरान 4गुना वृद्धि दर्ज की गई। क्षति अवधि के दौरान कुल आयातों में वृद्धि हुई है और संबद्ध देश के आयातों में अल्प मात्रा में ऐसी ही वृद्धि देखी गई है। संबद्ध देशों से आयातों में वर्ष 2004-05 से तेजी से गिरावट आई, जिससे चीन जन.गण. से आयातों का रास्ता साफ हो गया। कुल मिलाकर घरेलू उत्पादन घरेलू मांग से कम रहा है, जिसका एक बड़ा हिस्सा याचिकाकर्ताओं से ही प्राप्त होता है। अनिवार्यतः पूर्ति न की गई मांग को पूरा करने के लिए आयातों की जरूरत है।

42. प्रकटन पश्चात अपनी टिप्पणियों में घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि वह वर्ष निकालना वस्तुतः गलत है कि कैप्टिव खपत पर जोर दिए जाने या व्यापारी मांग को पूरा

करने में असमर्थता के कारण आयात जरूरी थे क्योंकि मांग वर्तमान क्षमता से काफी कम थी और जांच अवधि में पर्याप्त आयात किए जाने से उत्पादन मांग से कम होगा, इस प्रकार घरेलू मांग और क्षमता के बीच अंतर प्रासंगिक है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा क्षमता में वृद्धि के मद्देनजर इस तर्क को संज्ञान में लिया है।

(ख) बिक्री पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव और घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा

कुल मांग में % हिस्सा	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि ¹
क) संबद्ध देश से आयात	1.29	2.34	2.12	4.31
सूचीबद्ध	100	181	164	333
ख) अन्य आयात	1.22	1.86	0.04	0.12
सूचीबद्ध	100	151	3	10
ग) कुल आयात	2.52	4.19	2.16	4.43
सूचीबद्ध	100	167	86	176
घ) घरेलू उद्योग	22.74	18.91	21.57	21.03
सूचीबद्ध	100	83	95	92
ङ) आबद्ध खपत	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	103	102	102
च) अन्य घरेलू उत्पादक	8.77	8.66	8.94	7.56
सूचीबद्ध	100	99	102	86
पाटित आयात/घरेलू उत्पादन	***	***	***	***
पाटित आयात/कुल आयात	51.34	55.76	98.13	97.24

नोट: ¹: यथानुपात आधार पर वार्षिकीकृत

स्रोत: घरेलू उद्योग, डीजीसीआईएस।

43. प्राधिकारी ने नोट किया कि संबद्ध वस्तु के कुल आयात कुल मांग में 2.52% से बढ़कर क्षति अवधि में 4.43% हो गए जबकि संबद्ध देश के आयात 1.29% बढ़कर 4.31% हो गए। दूसरे शब्दों में जहां आधार वर्ष में 100 के सूचीबद्ध आंकड़े से कुल आयात बढ़कर जांच अवधि में 176 हो गए वहीं संबद्ध देश के आयात बढ़कर 333 हो गए। अन्य देशों से आयात नगण्य रहे हैं। प्राधिकारी ने यह पाया कि उत्पादित के कुल आयातों में संबद्ध देश से हुए आयातों का हिस्सा आधार वर्ष में 51% से लगभग दोगुना होकर जांच अवधि में 97% हो गया है। क्षति अवधि में अन्य घरेलू उत्पादकों का हिस्सा लगभग स्थिर रहा है। किसी भी हालत में इन उत्पादकों के बारे में यह कहा जाता है कि वे संबद्ध उत्पाद की आबद्ध खपत कर रहे हैं और मर्चेन्ट बिक्री के लिए किसी मात्रा की पेशकश नहीं कर रहे हैं। घरेलू उद्योग में भी आबद्ध खपत क्षति अवधि में आधार वर्ष की 66% खपत से बढ़कर जांच अवधि में 67% हो गई। यद्यपि, वर्ष 2003-04 में सर्वाधिक 68% रही थी। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वर्ष 2003-04 में 19% की गिरावट आने के बाद वर्ष 2002-03 में 22.7% से घटकर जांच अवधि में 21% हो गया। तथापि, यदि घरेलू उद्योग की बिक्री में आबद्ध खपत को भी

जोड़ दिया जाए तो बाजार हिस्से में 3% की वृद्धि होने के बावजूद क्षति अवधि में आयातों के हिस्से में मात्र 0.7% की वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग के उत्पादन, संबद्ध देश के आयातों के प्रतिशत में वर्ष 2002 में 1.41% की तुलना में बाजार हिस्से के अनुरूप जांच अवधि में 4.79% की वृद्धि हुई।

44. प्रकटन पश्चात् अपनी टिप्पणियों में घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि बाजार हिस्से और कैप्टिव खपत सहित मात्रात्मक प्रभाव का निर्धारण अत्यंत भ्रामक है। अतः मांग में कैप्टिव खपत को छोड़कर बाजार हिस्से की पुनः संगणना की गई है और स्थिति निम्नानुसार दर्शाई गई है।

घरेलू मांग में % हिस्सा	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि ¹
मांग मी.टन में (कैप्टिव खपत को छोड़कर)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	95	94	113
% संबद्ध देश से आयात	3.80	7.36	6.50	13.05
सूचीबद्ध	100	194	171	344
% अन्य आयात	3.60	5.84	0.12	0.37
सूचीबद्ध	100	162	3	10
% घरेलू उद्योग की बिक्री	66.84	59.54	66.02	63.69
सूचीबद्ध	100	89	99	95
% अन्य उत्पादन	25.77	27.26	27.36	22.89
सूचीबद्ध	100	106	106	89
% कुल आयात	7.40	13.20	6.62	13.42
सूचीबद्ध	100	178	90	181

45. कैप्टिव खपत रहित घरेलू मांग से घटती-बढ़ती प्रवृत्ति का पता चलता है जो आधार वर्ष की मांग से बढ़कर जांच अवधि में 113 हो गई है। क्षति अवधि में मांग के प्रतिशत के रूप में कुल आयातों में 6% की वृद्धि हुई है जिसमें से संबद्ध देश के आयातों में 9% की वृद्धि हुई है और अन्य देशों से आयातों में 3% की गिरावट आई है। क्षति अवधि में घरेलू उद्योग और अन्य घरेलू उत्पादकों, दोनों की बिक्री में 3% की गिरावट आई है, जो वर्ष 2002-03 तक 67% और 26% से घटकर जांच अवधि में क्रमशः 64% और 23% हो गई है। तथापि, यह देखा गया है कि कैप्टिव खपत को छोड़ने से उत्पाद की वास्तविक मांग में कमी का पता चलता है।

(ग) घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

46. घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच उसकी क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और इन मापदंडों पर फटित आयातों के प्रभाव, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है।

मापदंड	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि ¹
क्षमता	23955	26635	37670	37670
सूचीबद्ध	100	111	157	157
उत्पादन	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	100	98	114
क्षमता उपयोग (%)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	90	62	73
घरेलू मांग (मी.ट.)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	101	98	116

नोट: ¹ : यथानुपात आधार पर वार्षिकीकृत

स्रोत: घरेलू उद्योग, डीजीसीआईएस ।

प्राधिकारी ने नोट किया कि घरेलू उद्योग द्वारा क्षति अवधि के दौरान क्षमता में द्रुगुनी वृद्धि की गई । जैसा कि सूचीबद्ध आंकड़ों से देखा जा सकता है जो आधार वर्ष में 100 से बढ़कर वर्ष 2003-04 में 111 तथा वर्ष 2004-05 में और अधिक बढ़कर 157 हो गई । वर्ष 2003-04 से क्षमता मांग से अधिक हो गई जिसमें वर्ष 2002-03 की तुलना में जांच अवधि में केवल 116 की वृद्धि हुई है । यद्यपि वर्ष 2003-04 में क्षमता में वृद्धि उत्पादन संयंत्र को बाधा रहित करने के कारण हुई थी, तथापि, वर्ष 2004-05 में इसमें वृद्धि नए संयंत्र की स्थापना के कारण हुई थी । क्षमता उपयोग विस्तार के कारण वर्ष 2003-04 में लगातार कम होकर 87% और 2004-05 में 60% हो गया और जांच अवधि में बढ़कर 70% हो गया । प्राधिकारी ने नोट किया कि बढ़ती हुई क्षमता के बावजूद घरेलू उत्पादन समूची क्षति अवधि के दौरान मांग से कम रहा है ।

ख. पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

47. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभावों का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।"

48. इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारत औसत उत्पादन लागत, भारत औसत निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) और क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच कीमत के साथ की गई है ताकि इस बात की जांच की जा सके कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती या कम कीमत पर बिक्री हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों से कीमत में गिरावट अथवा कीमत वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।

(क) कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री

49. कीमत कटौती का निर्धारण एन हाइड्रस रूप में परिचालित पाटित आयातों की पहुंच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की भारित औसत कारखाना निवल बिक्री प्राप्ति के साथ करके किया गया है जिसमें प्रस्तावित रिबेट, छूट, कमीशन और प्रदत्त उत्पाद शुल्क को शामिल नहीं किया गया है। कम कीमत पर बिक्री के विश्लेषण हेतु पाटित आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना उचित लाभ मार्जिन के साथ उद्योग की सत्यापित लागत और एसजीए व्यय को ध्यान में रखते हुए निर्धारित की गई संबद्ध वस्तु की एनेआईपी के साथ की गई है।

मापक (रु./मी.टन)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
पहुंच मूल्य		37218	48399	4754
सूचीबद्ध		100	130	128
वर्ष दर वर्ष परिवर्तन			11181	-856
बिक्री कीमत	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	112	111	123
वर्ष दर वर्ष परिवर्तन		5782	-404	5769
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	112	112	124
वर्ष दर वर्ष परिवर्तन		5477	138	5680
बिक्री की लागत	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	111	123	131
वर्ष दर वर्ष परिवर्तन		4590	5152	3433
कीमत कटौती		***	***	***
कीमत कटौती %		28.83	7.69	18.18
क्षतिरहित कीमत				***
कम कीमत पर बिक्री				***
कम कीमत पर बिक्री %				8.23

टिप्पणी: ' . नि.वि.प्रा. (-) आयातों का पहुंच मूल्य', क्षति रहित कीमत (-) पहुंच मूल्य

स्रोत: घरेलू उद्योग, डीजीसीआईएस।

50. प्राधिकारी ने नोट किया है कि संबद्ध वस्तु के आयातों का सूचीबद्ध पहुंच मूल्य वर्ष 2003-04 के बाद बढ़कर 134 हो गया और एनएसआर वर्ष 2002-03 से बढ़कर 124 हो गई। पहुंच मूल्य समूची क्षति अवधि के दौरान एनएसआर और बिक्री लागत से कम था। वर्ष 2004-05 में वार्षिक परिवर्तनों की संगणना करने पर पहुंच मूल्य में वर्ष 2003-04 की तुलना में लगभग 11,200 रुपए प्रति मी.टन की वृद्धि देखी गई है जबकि प्रति मी.टन घरेलू बिक्री कीमत में 400 रुपए और एनएसआर में लगभग 140 रुपए की वृद्धि हुई। जबकि बिक्री लागत में 5150 रुपए प्रति मी.टन की बढ़ोतरी हुई। वर्ष 2004-05 और जांच अवधि में बिक्री लागत में वृद्धि के बावजूद जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत तथा एनएसआर में लगभग 5700-5800 रुपए प्रति मी.टन की सर्वाधिक वृद्धि हुई, जिससे यह पता

चलता है कि उद्योग ने जांच अवधि में भारी मुनाफा कमाया । कीमत काटौती वर्ष 2003-04 में 29% से घटकर 2004-05 में 8% हो गई और जांच अवधि में बढ़कर 18% हो गई । उच्चतम न्यायालय के सीए सं. 1294/2001 में पारित आदेशों का अनुपालन करते हुए घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत का निर्धारण 47544 रूपए के पहुंच मूल्य की तुलना में जांच अवधि में *** रूपए प्रति मी.टन किया गया है क्योंकि कम कीमत पर बिक्री लगभग 8% की है ।

51. प्रकटन पश्चात अपनी टिप्पणियों में घरेलू उद्योग का उल्लेख किया है कि :

- (क) क्षति रहित कीमत के भारित औसत का निर्धारण केवल व्यापारी बिक्री के आधार पर किया जाना चाहिए न कि सकल उत्पादन के आधार पर ।
- (ख) पैकिंग लागत का निर्धारण सही प्रतीत नहीं होता है । एच एफ-100% को पैकिंग लागत के निर्धारण हेतु अलग रखा जाना चाहिए था क्योंकि इसे पैक नहीं किया गया है और आईएसओ कंटेनर प्रभारों की अनुमति नहीं दी गई है ।
- (ग) उत्पादन लागत में से संदत्त आईएसओ कंटेनर प्रभारों के शामिल न किए जाने के कारण निवल बिक्री प्राप्ति सही प्रतीत नहीं होती है ।

52. तथापि, प्राधिकारी ने यह पाया है कि :

- (क) भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करने के लिए घरेलू अपेक्षा हेतु उपलब्ध उत्पादन का आकलन करने के प्रयोजनार्थ कुल उत्पादन में से केवल घरेलू बिक्री को घटाया जाता है;
- (ख) दावा की गई पैकिंग सामग्री की खपत की इकाई लागत की अनुमति मूल जांच में अपनाई गई प्रक्रिया के अनुरूप प्रदान की गई है और दावा किए गए आईएसओ कंटेनर प्रभारों की अनुमति से इंकार नहीं किया गया है ।
- (ग) चूंकि क्षति रहित कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ आईएस ओ कंटेनर प्रभारों से इंकार नहीं किया गया है, इसलिए निवल बिक्री कीमत निकालने के लिए उन्हें बिक्री कीमत में से घटाया नहीं गया है ।

(ख) कीमत ह्रास एवं न्यूनीकरण

53. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के कीमत ह्रासकारी प्रभाव की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की प्रवृत्ति की तुलना बिक्री लागत के साथ की गई है । तालिका से यह देखा जाता है कि यद्यपि जांच अवधि में बिक्री लागत तथा संबद्ध वस्तु की निवल बिक्री प्राप्ति में वृद्धि हुई है, तथापि बिक्री प्राप्ति में प्रवृत्ति बिक्री लागत में हुई वृद्धि की

तुलना में कम रही है। परंतु जहां बिक्री लागत में वर्ष 2004-05 से जांच अवधि तक 8 कारक की वृद्धि हुई है, वहीं संबंधित अवधियों के बीच बिक्री कीमत और निवल बिक्री प्राप्ति में 12 कारक की वृद्धि हुई है। अतः कीमत में कोई ह्रास नहीं हुआ है। इसके अलावा, वर्ष 2004-05 में निवल बिक्री प्राप्ति में मामूली गिरावट को छोड़ते हुए बिक्री कीमत और निवल बिक्री प्राप्ति बिक्री लागत से अधिक रही है। बिक्री लागत में परिवर्तन की तुलना क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के साथ करने पर यह देखा गया है कि वर्ष 2004-05 से बिक्री लागत में परिवर्तन आंशिक रूप से कच्ची सामग्री की लागत में वृद्धि और क्षमता के कम उपयोग के कारण हुआ है जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2003-04 की तुलना में उत्पादन के मामूली कम स्तर के मुकाबले लागत अधिक हुई और यह परिवर्तन आंशिक रूप से उच्चतर बिक्री कीमत के जरिए उपभोक्ताओं को लाभ दिए बिना लागत वृद्धि आत्मसात करने के कारण आया है। अतः कीमत में कुछ ह्रास हुआ है।

छ.3 क्षति संबंधी अन्य कारकों की जांच

(क) लाभों पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

54. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता की स्थिति निम्नानुसार रही है :-

मापक (लाख रुपये में)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
घ.उ. की बिक्री लागत	***	***	***	***
घ.उ. की बिक्री प्राप्ति	***	***	***	***
घरेलू बिक्री पर लाभ/हानि	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	102	20	68
लाभ/हानि (स./जी.टन). ²	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	122	21	63
ब्याज	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	84	97	89
पीपीआईटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	100	30	71

नोट: ¹ यथानुपात आधार पर वार्षिकीकृत

2. बिक्री प्राप्ति-बिक्री लागत

स्रोत: घरेलू उद्योग,

यद्यपि घरेलू उद्योग की बिक्री लागत हमेशा बिक्री प्राप्ति से कम रही थी, तथापि लाभ के स्तर में 2004-05 में गिरावट आई और वह जांच अवधि में पूर्ववर्ती स्तर पर नहीं पहुंच सका, जैसा कि रुझानों से पता चलता है। बहरहाल जांच अवधि में प्राप्ति उल्लेखनीय रही है।

(ख) रोजगार तथा मजदूरी पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

55. घरेलू उद्योग का रोजगार स्तर निम्नानुसार रहा है :

मापदंड	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि ¹
कर्मचारी (संख्या)	***	***	***	***
मजदूरी (लाख रुपए)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	76	72	87

नोट: ¹ यथानुपात आधार पर वार्षिकीकृत

स्रोत: घरेलू उद्योग, I.

प्राधिकारी ने नोट किया कि संबद्ध उत्पाद के उत्पादन हेतु रोजगार के स्तर में मामूली वृद्धि हुई है जबकि क्षति अवधि में मजदूरी में गिरावट आई है। तथापि, घरेलू उद्योग के बहु उत्पाद स्वरूप को ध्यान में रखते हुए इन मापदंडों को क्षति के निर्णायक संकेत तक नहीं माना गया है।

(ग) उत्पादकता पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

56. प्राधिकारी ने नोट किया कि समूची क्षति अवधि के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता और बिक्री में वृद्धि हुई और इस प्रकार इन मापदंडों में कोई क्षति प्रदर्शित नहीं होती है। तथापि, घरेलू उद्योग का बहु उत्पाद स्वरूप होने के कारण क्षति विश्लेषण हेतु इन मापदंडों पर विचार भी नहीं किया जा रहा है।

मापदंड	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि ¹
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	99	90	107
प्रति कर्मचारी बिक्री (रुपए में)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	93	94	124

नोट: ¹ यथानुपात आधार पर वार्षिकीकृत

स्रोत: घरेलू उद्योग, I.

(घ) नकद प्रवाह, लाभ एवं निवेश पर आय पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

57. चूंकि घरेलू उद्योग बहु उत्पाद उद्योग है, इसलिए क्षति के प्रयोजनार्थ नकद प्रवाह की जांच उचित नहीं हो सकती है। अतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के नकदी प्रवाह की स्थिति, लगाई गई पूंजी और निवेश पर आय की जांच की है।

मापदंड (लाख रुपये में)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
पीबीटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	102	20	68
मूल्यहास	***	***	***	***
नकद लाभ	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	101	27	75
पीबीआईटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	100	30	71
लगाई गई पूंजी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	114	162	196
लगाई गई पूंजी पर आय(%)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	88	19	36

नोट: : यथानुपात आधार पर वार्षिकीकृत

स्रोत: घरेलू उद्योग, ।

जैसा कि पहले ही देखा जा चुका है, सभी वर्षों में पीबीटी, पीबीआईटी और नकद लाभ सकारात्मक रहे हैं। यद्यपि, वर्ष 2004-05 में इन तीनों विधेय मापदंडों का नकारात्मक प्रभाव पड़ा था, तथापि, जांच अवधि में इनमें पर्याप्त सुधार आया है। लगाई गई पूंजी पर आय (%), सूचीबद्ध) यद्यपि सकारात्मक रही है, तथापि उसमें पीबीआईटी में आई गिरावट के कारण वर्ष 2004-05 में भारी गिरावट के साथ क्षति अवधि के तीन वर्षों में गिरावट आई है और लगाई गई पूंजी में वृद्धि हुई है किन्तु पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 16 कारक की वृद्धि हुई है। तथापि, लगाई गई पूंजी को छोड़कर आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में ये सभी मापदंड कम रहे हैं जो पूंजी के संबंध में आधार वर्ष के स्तर से लगभग दोगुने हैं।

(ख) माल सूचिकां

58. घरेलू उद्योग की माल सूची की स्थिति निम्नानुसार रही है:

मापदंड (मी.टन में)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
मालसूची का औसत स्टॉक	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	130	123	73
विक्रय के % के रूप में	***	***	***	***

नोट: : यथानुपात आधार पर वार्षिकीकृत

स्रोत: घरेलू उद्योग, ।

प्राधिकारी ने नोट किया है कि क्षति अवधि में औसत माल सूचियों में समग्र रूप में और बिक्री के %, दोनों रूप में गिरावट आई है। इस प्रकार इस मापदंड से क्षति का पता नहीं चलता है।

(च) पूंजी जुटाने की क्षमता

59. इस बात की पुष्टि करने के लिए प्राधिकारी के समक्ष कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है कि घरेलू उद्योग को पूंजी जुटाने की क्षमता के बारे में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

(छ) वृद्धि

60. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक उत्पादन और बिक्री जैसे भौतिक मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग की मांग में वृद्धि और निष्पादन में सुधार हुआ है भले ही इनमें कुछ घट-बढ़ रही हो। तथापि, वित्तीय मापदंडों का निष्पादन बेहतर नहीं रहा है।

(ज) पाटन मार्जिन की मात्रा

61. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति के एक संकेतक के रूप में संबद्ध देश से पाटन मार्जिन अत्यधिक पाया गया है।

छ.4 समग्र मूल्यांकन

62. कारकों के उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि संबद्ध देश से आयातों में क्रमिक वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग ने बाजार में अपना हिस्सा कमोबेश बनाए रखा है और कैप्टिव खपत सहित मांग की संगणना करते हुए क्षति अवधि के दौरान केवल 1.7% तथा कैप्टिव खपत को शामिल न करते हुए 3% की गिरावट दर्ज की है। 18% की कीमत कटौती और 8% की कम कीमत पर बिक्री हुई है, किंतु कीमत में कोई ह्रास नहीं हुआ है।

छ.5 क्षति के बारे में निष्कर्ष

63. प्राधिकारी ने नोट किया कि संबद्ध देश से हुए आयातों का कीमत प्रभाव समग्र रूप में और तुलनात्मक रूप में अत्यधिक रहा है और कीमत प्रभाव के परिणामस्वरूप कीमत कटौती कम कीमत पर बिक्री, तथा कीमत ह्रास हुआ है। तथापि, घरेलू उद्योग के भौतिक मापदंडों से पर्याप्त क्षति का पता नहीं चलता है यद्यपि ये अभी भी आधार वर्ष से कम हैं। आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2004-05 में क्षति को दर्शाने वाले कुछेक वित्तीय मापदंडों में जांच अवधि में गिरावट आने के बाद आंशिक सुधार हुआ है। अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को मामूली क्षति हुई है।

ज. कारणात्मक संबंध

64. अहेतुक मुहों के संबंध में अनिवार्य कारकों की जांच निम्नानुसार की गई है :

- ❖ मांग में कमी: - क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि हुई है।
- ❖ खपत की वृद्धि :- हितबद्ध पार्टियों ने यह उल्लेख किया है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा आबद्ध खपत में वृद्धि हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप बाजार हेतु संबद्ध वस्तु की उपलब्धता में कमी आई है। ऐसा ही मामला प्रतीत हो रहा है। प्राधिकारी ने यह पाया है कि घरेलू उद्योग के संघटकों के केन्द्र बिन्दु में घरेलू बिक्री में वृद्धि तथा मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन में वृद्धि के बीच अंतर आया है जिससे बाजार हेतु समग्र उपलब्धता प्रभावित हुई है।
- ❖ अन्य देशों से आयात :- संबद्ध देश से इतर देशों के मूल के संबद्ध उत्पाद के कुल आयात अत्यंत कम रहे हैं जिनका स्थान संबद्ध देशों से हुए वृद्धिशील आयातों ने ले लिया है।
- ❖ प्रतिस्पर्धा की स्थितियां :- यह वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है। यद्यपि याचिकाकर्ता सहित इस उत्पाद के 4 घरेलू उत्पादक हैं, तथापि दो अन्य द्वारा घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा नहीं की जा रही है क्योंकि वे अन्य मूल्यवर्धित वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। तथापि, दोनों घरेलू उद्योग उसी घरेलू बाजार की जरूरत को पूरा करते हैं।
- ❖ प्रौद्योगिकी विकास :- प्रौद्योगिकी में कोई उल्लेखनीय विकास नहीं हुआ है।
- ❖ घरेलू उद्योग का निर्यात :- निर्यात की स्थिति से यह पता चलता है कि यद्यपि मात्रा (सूचीबद्ध) 100 से बढ़कर वर्ष 2004-05 में 127 हो गई, तथापि जांच अवधि में घटकर 97 रह गई।

मापदंड	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
निर्यात मात्रा (मी.टन)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	119	127	97
निर्यात मूल्य (लाख रुपए)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	122	140	112
औसत दर (रु./मी.टन)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	103	111	115

ज.2 कारणात्मक संबंध स्थापित करने वाले कारक

65. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उत्पादन के निष्पादन की जांच से यह पता चलता है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण निष्पादन आंशिक प्रभाव पड़ा है। वर्ष 2002-03 की तुलना में जांच अवधि में पाटित आयातों की मात्रा में पर्याप्त 3% की वृद्धि होने के बावजूद यदि कैप्टिव खपत सहित मांग पर विचार किया जाए तो घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में क्षति अवधि में केवल 1.7% और यदि कैप्टिव खपत को छोड़कर मांग की संगणना की जाए तो 3% की गिरावट आई है। मांग में कमी याचिकाकर्ताओं द्वारा आबद्ध खपत बढ़ाए जाने के कारण हुई है। जांच अवधि में 18% की कीमत कटौती और 8% की कम कीमत पर बिक्री हुई है। घरेलू बिक्री तथा क्षमता में भी वृद्धि हुई है। उत्पादन में क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ बढ़ोत्तरी नहीं हुई है और इसीलिए क्षमता उपयोग में अंतरिम गिरावट आई है किन्तु पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में सुधार हुआ है। परिणामतः वर्ष 2004-05 में घरेलू उद्योग के लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय में गिरावट आई है तथा जांच अवधि में सुधार हुआ है। जिन वित्तीय मापदंडों में वर्ष 2004-05 में गिरावट आई थी, उनमें से अनेक मापदंडों में जांच अवधि में पर्याप्त सुधार हुआ है। वर्ष 2004-05 में गिरावट आंशिक रूप से क्षमता के कम उपयोग के कारण आई है, जिसके परिणामस्वरूप क्षमता में वृद्धि हुई है और आंशिक रूप से पाटित आयातों के कारण गिरावट आई है।

झ. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

66. प्राधिकारी ने उपर्युक्त निर्णय में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत तथा अन्य संबद्ध लागतों को ध्यान में रखते हुए क्षति रहित कीमत का निर्धारण किया है जो 51457 रूपए प्रति मी.टन बनता है। संबद्ध देश से क्षति मार्जिन निम्नानुसार है :

क्षति मार्जिन (रु./मी.टन)

प्रति मी.टन	से	एनआईपी	पहुंच मूल्य	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन %
रु. प्रति मी.टन	बल्क	***	41563	***	9.42
	डिब्बाबंद	***	47544	***	8.23
डॉ. प्रति मी.टन	बल्क	***	932.82	***	9.42
	डिब्बाबंद	***	1056.76	***	8.23

ट पाटन एवं क्षति जारी रहने की संभावना

67. अधिनियम की धारा 9क के तहत निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए किसी शुल्क समाप्ति समीक्षा में इस बात की जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन एवं क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

ट.1 हितवद्ध पार्टियों के विचार

(i) चीन के उत्पादकों के निर्यातोन्मुखी होने और अतिरिक्त उत्पादन क्षमता होने के बारे में

68. घरेलू उद्योग ने उल्लेख किया है कि एचएफ एसिड के उत्पादन हेतु प्रमुख कच्ची सामग्रिया फ्लोरस्फार और सल्फर हैं जो दोनों ही चीन में भारी मात्रा में उपलब्ध हैं और इनका खनन राज्य के नियंत्रण में किया जाता है। चीन के खनिजों पर अन्य देशों द्वारा पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है। चीन के उत्पादकों के पास घरेलू मांग से अधिक क्षमताएं हैं और वे बाजारों पर कब्जा करने के लिए किसी भी कीमत पर उत्पाद को बेचने की इच्छा रखने के कारण घरेलू तथा निर्यात बाजारों में आक्रामक प्रतिस्पर्धा करते हैं। चूंकि भारतीय बाजार बहुत बड़ा है और एचएफ एसिड की मांग काफी अधिक है और उसमें तेजी से वृद्धि हो रही है, इसलिए शुल्क समाप्त किए जाने से पाटित आयातों में पर्याप्त वृद्धि होगी जो जारी रही है और आयातों में मूल जांच अवधि में हुई वृद्धि की तुलना में वर्तमान अवधि में 8 गुना वृद्धि हुई है। आयातकों द्वारा यह कहते हुए इसकी मनाही की गई है कि चीन जन.गण. में फ्लोरस्फार को एक कार्यनीतिक सामग्री माना जाता है, जिसकी कीमत में उत्तरोत्तर वार्षिक वृद्धि होती है और निर्यात मात्रा में यह प्रतिबंधित है। याचिकाकर्ता ने भी अन्य देशों से फ्लोरस्फार का आयात किया है किन्तु चीन के उत्पाद की गुणवत्ता अंतर्राष्ट्रीय रूप से सर्वोत्तम मानी गई है। इसके अलावा, चीन के उत्पादकों के पास निपटान योग्य पर्याप्त मात्रा की मौजूदगी सही नहीं है और यह भी सही नहीं है कि चीन के पास सल्फर का प्रचुर भंडार है।

(ii) सतत पाटन और उसकी संभावना के बारे में

69. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि पूर्ववर्ती जांच अवधि के बाद चीन जन.गण. से हुए आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है। मूल जांच में निर्धारित पाटन मार्जिन 38% था। शुल्क लगाए जाने के बाद चीन जन.गण. से हुए सतत निर्यातों से स्पष्टतः यह पता चलता है कि यदि शुल्क समाप्त किया जाता है तो मात्रा में आगे और वृद्धि होगी। इससे पूर्व चीन के उत्पादकों द्वारा 70% को छोड़कर सभी सांद्रणों के एचएफ एसिड का पाटन किया जा रहा था, किन्तु शुल्क लगाए जाने के बाद उन्होंने एचएफ-70% बाजार की जरूरतों और अन्य कम सांद्रणों की जरूरत को पूरा करने के लिए पाटित कीमतों पर एचएफ-70% का निर्यात शुरू किया।

ट.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

70. प्राधिकारी ने यह पाया है कि वर्तमान परिदृश्य में संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में जांच अवधि में भारी वृद्धि दर्ज की गई है, जिससे अन्य देशों से हुए आयात अग्रभावी हो गए हैं। चीन से आयात मुख्यतः एचएफ 70% सांद्रण के हुए हैं, जबकि कम सांद्रणों का आयात यूरोपीय संघ तथा अमरीका से किया जा रहा है। तथापि, आयातों में पर्याप्त वृद्धि के बावजूद यदि मांग की संयोजना में कैप्टिव उत्पादन को शामिल कर लिया जाए तो घरेलू उद्योग ने जांच अवधि में अपने बाजार हिस्से के केवल 1.7% और यदि कैप्टिव खपत को शामिल न किया

जाए तो 3% हिस्से को गंवाया है। उच्चतर क्षमता के बावजूद घरेलू उत्पादन मांग से कम था और अधिकांश उत्पादन की आबद्ध खपत की जा रही है, इसलिए कमी को पूरा करने के लिए आयातों की जरूरत है। जहां तक कीमतों पर संबद्ध देश के आयातों के प्रभाव का संबंध है, कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हुई है, किन्तु कीमत ह्रासकारी या न्यूनकारी प्रभाव नहीं पड़ा है।

71. संभावित परिदृश्य का आकलन करने में चीन सीमाशुल्क द्वारा वर्ल्ड ट्रेड एटलस में सूचित आंकड़ों से स्पष्ट तौर पर भारत सहित विभिन्न देशों को एचएफ एसिड के निर्यातों में वृद्धि और फ्लोरस्फार निर्यातों में प्रतिबंध के साक्ष्य का पता चलता है। दोनों के निर्यात की स्थिति नीचे दर्शायी गई है।

चीन - हाइड्रोजन फ्लूराइड का कुल निर्यात (मी.टन में)					
देश	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
जापान	5432	19952	40712	58393	63391
भारत	324	594	523	1000	1914
सिंगापुर	574	879	2646	3928	4969
कोरिया	4144	5501	6987	14505	16604
ताइवान	11382	13977	12614	15101	19436
संसार	29775	51588	75183	105117	122357
चीन - फ्लोरस्फार का कुल निर्यात - 25292200 (मी.टन में)					
संसार	830364	813323	666080	689207	654209
यूएसए	351781	374381	320896	415881	297339
नीदरलैंड	72632	78963	55362	77881	125551
जापान	208318	201285	162146	107934	100914
कनाडा	37816	39323	54621	52927	48638
इटली	83498	56313	42354	13959	47775
भारत	36277	30078	18303	464	177

आंकड़ों का स्रोत: चीन सीशु., डब्ल्यूटीए

72. भारत में विशेष रूप से चीन से हुए फ्लोरस्फार के आयातों में भारी गिरावट देखी गई है जो वर्ष 2002-03 में 36,000 मी.टन से घटकर वर्ष 2006-07 में 177 मी.टन हो गई है, जिसका मांग में गिरावट से कोई संबंध नहीं है। इसे विपरीत एचएफ एसिड की मांग में जहां कमी आ रही है, वहीं तर्कसम्मत रूप से फ्लोरस्फार की जरूरतों में वृद्धि हुई होगी। फ्लोरस्फार के आयात केनिया, मैक्सिको, मंगोलिया आदि जैसे देशों से किए जाते हैं। किन्तु, चीन से हुए एचएफ एसिड के आयातों में पिछले दो वर्षों के दौरान तीन गुने से अधिक की वृद्धि हुई है जबकि चीन का ध्यान मूल कच्ची सामग्री के बजाए मूल्यवर्धित उत्पादों के निर्यात पर केन्द्रित हो रहा है।

73. प्राधिकारी ने नोट किया कि प्रत्येक प्रमुख कच्ची सामग्री के लिए आधार वर्ष की तुलना में कच्ची सामग्री की लागत में वृद्धि हुई है। यद्यपि चीन से भिन्न देशों से आयात

के कारण फ्लोर्सपार की दर में वृद्धि को पेट्रोलियम की बढ़ती हुई कीमतों से जोड़ दिया जाता है और इन दरों में वृद्धि की प्रबल संभाव है क्योंकि जांच अवधि के बाद पेट्रोलियम की कीमतों में वृद्धि जारी है।

74. प्राधिकारी ने नोट किया कि मूल जांच में खुले/पैक रहित रूप में एचएफ एसिड की निर्धारित संदर्भ कीमत 797.60 डालर प्रति मी.टन और डिब्बाबंद रूप में 871.80 डालर प्रति मी.टन थी। एच एफ एसिड के डिब्बाबंद स्वरूप पर विचार करते हुए क्षति अवधि के दौरान प्रचलित रूपया बैंच मार्क कीमत वर्ष 2004-05 तथा जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से उत्पाद के आयातों के पहुंच मूल्य से कम थी क्योंकि वस्तुतः इन वर्षों में कोई शुल्क लागू नहीं था। इसके अलावा, चूंकि चीन से एच एफ 70% उत्पाद का अधिकांश आयात किया गया है इसलिए कोई शुल्क संदेय नहीं था। एच एफ 70% को मूल जांच में शुल्क के दायरे से इसलिए बाहर रखा गया है क्योंकि उसके सांद्रण के आयात संगणित सामान्य मूल्य से अधिक कीमत पर किए गए हैं।

ठ. भारतीय उद्योग का हित

75. पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहारों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल की जा सके जो कि देश के सामान्य हित में है। यद्यपि, पाटनरोधी शुल्क लागू किए जाने से संबद्ध वस्तु का उपयोग करते हुए विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और उससे उनकी तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है, तथापि उसे लागू किए जाने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इस प्रकार उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

ड निष्कर्ष:

76. उठाए गए मुद्दों की जांच करने के बाद और वर्तमान पाटन एवं क्षति तथा पाटन एवं क्षति के जारी रहने/उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- (i) चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु का प्रवेश उसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर हुआ है और आयातित संबद्ध वस्तु का पाटन मार्जिन काफी अधिक है।
- (ii) शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन के जारी रहने की संभावना है।

- (iii) पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को इस समय कुछ क्षति हुई है; और शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में क्षति के बढ़ने की संभावना मौजूद है ।
- (iv) अतः चीन जन. गण. के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क को सतत रूप से जारी रखना अपेक्षित है ।

ढ. सिफारिशें:

77. समीक्षा करने और यह निष्कर्ष निकालने के बाद कि संबद्ध देश से पाटन के जारी रहने एवं घरेलू उद्योग को परिणामी क्षति होने की संभावना है, प्राधिकारी की राय यह है कि संबद्ध देश से आयातों के खिलाफ उपाय जारी रखना अपेक्षित है । तथापि, संबद्ध देशों से पाटन के वर्तमान स्तर तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति पर विचार करते हुए प्राधिकारी का मत यह है कि लागू उपाय को संशोधित किए जाने की जरूरत है । अतः प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं और नीचे उल्लिखित स्वरूप में और तरीके से अधिनियम की धारा 9 क(5) के अनुसार संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क को सतत रूप से लगाए जाने की सिफारिश करते हैं ।

78. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए वह क्षति या पाटन मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को सतत रूप से लागू करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को क्षति की संभावना को दूर किया जा सके । मूल जांच में शुल्क संदर्भ कीमत आधार पर लागू किया गया था और प्राधिकारी इसे संदर्भ कीमत आधार पर पुनः लागू करना उचित समझते हैं । अतः प्राधिकारी चीन जन.गण. के मूल के या वहां के मूल से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर कॉलम 9 में उल्लिखित मूल्य से कम पहुंच मूल्य और परिवहन समय होने की स्थिति में, निम्नलिखित तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित पहुंच मूल्य तथा संदर्भ कीमत के बीच अंतर के रूप में निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की सिफारिश करते हैं । इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य का निर्धारण सीमाशुल्क द्वारा निर्धारित वस्तु + लागू मूल सीमाशुल्क के रूप में किया जाएगा ।

क्र. स.	उप शीर्ष/टैरिफ मद	वस्तु विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	संदर्भ कीमत	भाष-की इकाई	मुद्रा
1	28111100	हाइड्रोफ्लोरिक एसिड	सभी सांद्रण (बल्क)	चीन जन. गण.	कोई	कोई	कोई	10.108 प्रतिशत सांद्रण द्वारा गुणित	मी. टन.	अम. डॉ.
2	28111100	-वही-	सभी सांद्रण (डिब्बा बंद)	चीन जन. गण.	कोई	कोई	कोई	132.94 + 10.108 प्रतिशत सांद्रण द्वारा गुणित	मी. टन.	अम. डॉ.
3	28111100	-वही-	सभी सांद्रण (बल्क)	कोई	चीन जन. गण.	कोई	कोई	10.108 प्रतिशत सांद्रण द्वारा गुणित	मी. टन.	अम. डॉ.
4	28111100	-वही-	सभी सांद्रण (डिब्बा बंद)	कोई	चीन जन. गण.	कोई	कोई	132.94 + 10.108 प्रतिशत सांद्रण द्वारा गुणित	मी. टन.	अम. डॉ.

ग. आगे की प्रक्रिया

79. केन्द्र सरकार के आदेशों के विरुद्ध इस सिफारिश से उत्पन्न होने वाली कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

80. प्राधिकारी अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार समय-समय पर की गई सिफारिश और इस संबंध में समय-समय पर जारी की गई सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार निश्चयात्मक उपाय को जारी रखने, उसमें संशोधन करने या उसे समाप्त करने की जरूरत की समीक्षा कर सकते हैं। प्राधिकारी द्वारा ऐसी किसी समीक्षा हेतु किसी अनुरोध को तब तक स्वीकार नहीं किया जाएगा जब तक कि उसे इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय सीमा के भीतर किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा दायर न किया गया हो।

आर. गोपालम, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)
NOTIFICATION

New Delhi, the 25th March, 2008

Final Findings

Subject : Sunset Review of the definitive anti-dumping duty on imports of Hydro Fluoric Acid originating in/exported from the China PR.

No. 4/13/2006-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules (hereinafter also referred as Rules), 1995, thereof;

A. BACKGROUND

2. WHEREAS, having regard to above Rules, the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) initiated anti-dumping investigation on 11th December 2001 into alleged dumping of Hydrofluoric Acid (hereinafter referred to as subject product/goods) originating in/exported from China PR (hereinafter referred to as subject country). Provisional antidumping duties were imposed on imports of the subject goods from the subject country vide customs notification No: 35/2002-Customs dated 28th March 2002, based on the preliminary findings of the Authority dated 15th February 2002. The final findings of the Authority were published vide notification of 26th November 2002 and definitive anti dumping duties were imposed on the subject goods from the subject country vide notification No: 10/2003-Customs dated 15th January 2003.

3. WHEREAS on the basis of a duly substantiated application filed by M/s. Tanfac Industries Ltd, Cuddalore representing a major proportion of the domestic production of the subject product, the Authority initiated sunset review of the anti dumping duty on imports of the subject product originating from the subject country vide notification dated 17th March 2007 under section 9A (5) of the Act, to examine whether the expiry of the duty would lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

4. AND WHEREAS vide Notification No: 45/2007- Customs dated 26th March 2007, the definitive duties were extended by the Central Government under Section 9A (5) for a period of one year up to 27th March 2008 and the time for completion of the Sunset Review findings have also been extended upto 26th March, 2008.

B. PROCEDURE:

5. The procedure described below has been followed:-

(i) As per Rule 5(5) supra, the Authority notified the Embassy of subject country in India about the receipt of fully documented application from the applicant before proceeding to initiate the review investigation;

(ii) In accordance with Rule 6(2) supra, the Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters/ producers, importers, industry associations, the Embassy of the country concerned and to the applicants and gave them an opportunity to make their views known in writing.

(iii) According to Rule 6(4) supra, the Authority provided a copy of the relevant questionnaire to all the known exporters and the Embassy of subject country in India and other interested parties.

(iv) The Embassy of subject country in New Delhi was also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time.

(v) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from the subject countries.

- Quzhua Fluorine Chemical Co. Ltd., Quzhou, }
- Yingpeng Chemical Company., Ltd. Yongkang, } Zhejiang,
- Yingguang Chemical Company Ltd., Dongyang, } China
- Sanmei Chemical Industry Co. Ltd., Wuyi, }
- 3-F Jinan Chemical Co. Ltd. Jinan, } Shandong,
- Dongyue Chemical Co. Ltd., Zibo, } China
- Melian Chemical Co. Ltd., Taishou, }
- Ato-3F Changsu Chemical Co. Ltd., Changshu, } Jiangsu,
- Xinhua Chemical Plant, Changshu, } China
- Fudu Chemical Co. Ltd. Shiyang, }
- Shanghai Tianyuan Fluorine Chemical Co. Ltd., Shanghai, China
- Yongfei Chemicals Co. Ltd., Shouwu, Fujian, China

None of the exporters from China PR responded to the exporter's questionnaire.

(vi) A copy of initiation notification along with the importers' questionnaire was also sent to the various importers listed in the application.

- ❖ M/s Competent Dyestuff & Allied Products Pvt. Ltd. Ghaziabad
- ❖ M/s Oswal Enterprises, Ahmedabad
- ❖ M/s MFPL Fluorine Products Ltd. Chennai

However, response to the importers' questionnaire was received initially only from M/s MFPL Fluorine and later from another importer/user, M/s Fluorides & Chemicals, Puducherry, which was taken into account after initial deficiencies were rectified. M/s Overseas Chemtech also responded to the initiation notification and sought to be included in the investigations, but submissions made by them indicated that they were incorporated only after the period of investigation and had no imports, so that the said party did not qualify as an interested party under Rule 2 (c) of the AD Rules.

(vii) Copies of initiation notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM, Excise Law Times etc., for wider circulation.

(viii) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigation.

(ix) The investigation of dumping and injury covered the period from 1st April 2005 to 30th September 2006 (Also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 1st April 2002 to the end of POI (also called Injury period).

(x) The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of determination of dumping and resulting injury. The Authority conducted on-the-spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the cost to produce and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the applicants to ascertain if anti dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.

(xi) The Authority held a public hearing on 25th October 2007 and another hearing on 21st November 2007 to hear the interested parties orally. The hearings were attended by representatives of the domestic industry and the importers. The participating parties were requested to file written submissions of the views expressed, which submissions have been considered by the Authority in this finding, except those of M/s Overseas Chemtech.

(xii) The essential facts of the case were disclosed to all interested parties in the form of confidential and general disclosures. Comments of the interested parties on the disclosure statement, to the extent they are relevant and supported by evidence, have been considered by the Authority.

(xiii) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties. **** In this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules on merits.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND "LIKE" ARTICLE.

6. The product under consideration in the present investigation, as defined in the original investigation, is Hydrofluoric acid of all forms, purities and concentrations originating in or exported from China PR. Hydrofluoric (or HF) Acid could be in the form of liquid or gas and anhydrous or aqueous/diluted. It is used as a catalyst for gasoline alkylation, in manufacture of inorganic fluorides, fluorinated hydrocarbon compounds, refrigerants, as a pickling agent for descaling stainless strips and high silicon sheets, glass etching, etc. The raw materials used are acid grade fluorspar, sulphuric acid and oleum, which are fed into a pre-reactor at predetermined rates, mixed and converted into a homogeneous mixture and pushed into the HF acid reactor. The resulting HF gas is drawn into a pre-scrubbing tower for washing and then condensed using chilled calcium chloride solution. The liquid is then purified by distillation and the anhydrite by-product is withdrawn separately. HF acid is sold in dilute concentrations ranging from 20% to 70% denoted in the findings as HF - 20% to HF- 70% or as 100% pure anhydrous, i.e., HF -100%.

7. Hydrofluoric Acid is an inorganic chemical classified under Chapter 28 of the Customs Tariff Act under Customs Sub-heading 281111 of the Customs Tariff Act, 1975 and the International Trade Classification. The classification, however, is only indicative and in no way binding on the scope of the present investigation, which being a sunset review investigation, has its scope limited to the product already identified in the original investigation. The subject goods produced by domestic industry are used interchangeably with those imported from the subject countries. Therefore, the Authority holds that the two are "like articles" within the meaning of the Rules.

D. STANDING OF THE DOMESTIC INDUSTRY

8. The sunset review has been initiated on the basis of a duly substantiated request submitted by M/s. Tanfac Industries Ltd, Cuddalore, on behalf of the domestic industry, supported by M/s Navin Fluorine International Ltd, Mumbai. The petitioner and the supporter are the only merchant sellers of the subject product. Two other producers of HF acid, viz., M/s Gujarat Fluorine and M/s SRF Ltd consume the product captively. Both had imported the product in the POI, M/s SRF Ltd having imported HF 100% in substantial quantity. Therefore, M/s Gujarat Fluorine and M/s SRF are deemed not to form a part of the domestic industry under Rule 2 (b) of the AD Rules. The Authority holds M/s Tanfac Industries and M/s Navin Fluorine to constitute the domestic industry for the purpose of the current investigation.

E. VIEWS OF THE INTERESTED PARTIES

9. The views of the interested parties are incorporated at appropriate places in the findings, but those of a general nature are as below:

a) On admissibility of the petition

10. The co-operating importers have contended that the petitioner does not constitute the majority of the domestic industry and production is not more than 50% of domestic production, if the total production capacity of all four units of the domestic industry was considered. Only a part of the production of Tanfac, Navin Fluorine and SRF Ltd. were being sold as HF and the petitioner's claim that SRF was consuming all its production captively was not true. Therefore, the petition should be dismissed. In response, the domestic industry has stated that the petitioner was a major domestic producer of the subject product and constituted domestic industry within the meaning of the Rules. Further, that after initiation, Navin Fluorine has provided full information. The two together constitute the entire domestic production for the merchant market. The combined capacity of SRF and Gujarat Fluorine was below 20 TMT and was only for captive consumption. Even if their production was included, the production of the petitioners constituted more than 50%. The Authority observed that the petitioners jointly constituted over 70% of the domestic market, while the other two units had imported the subject product in the POI, so that they did not constitute part of the domestic industry.

b) On extension of duty

11. The importers have claimed that anti-dumping duty cannot be extended on a product not covered by the original investigation and the contention that HF-70% was being imported to circumvent duty was untenable. They have further stated that when HF-70% was not viewed as a dumped commodity, the question of review did not arise, as the technical properties of the product had not changed. Besides, even if there had been duty on HF-70%, the landed value was much higher and would not have attracted duty. The domestic industry has responded that in a review, the Authority re-determined the dumping margin for extending duty and exclusion of HF-70% from the review would facilitate circumvention of duty by importing it, while inclusion of HF-70% in the scope of the product did not imply enlargement in the scope. The Authority noted that in the original investigations, the product under consideration was HF acid as a whole.

c) On insufficient capacity of and captive consumption by the domestic industry

12. The importers have claimed that the petitioners' production capacity was 30-40 TMT of HF acid annually, of which 85-90% was captively used to produce value added products. Only a small part of production was sold as HF acid in various concentrations in the domestic and export markets. The quantity produced by the petitioner could be entirely captively consumed without making any quantity available for merchandise sale. That the petitioner on incorporation was licensed to manufacture only aluminium fluoride

with captive use of HF, but 5 years later, the company diverted part of HF acid produced for merchant sales without increasing capacity. Availability of the subject product for sale thus depended on orders for value added production. In the absence of clear demarcation of capacity and availability of the product, the petitioner's production should not be included in total domestic production. Besides, there can arise a paradoxical situation where capacity utilization of the plant can be 100%, but product availability can be 0%, so that without quantification of availability, any discussion on capacity would be meaningless. Further, one of the domestic units had reduced sales quantity from 500 MT to 150 MT, creating shortages in the market and importing anhydrous HF acid for their own consumption. The severe shortage of the subject product and the doubling of Chinese prices in the past 12 months have led to rising input prices which could result in close-down of the downstream industry and loss of jobs. The domestic industry has refuted this argument, affirming that on account of dumping from China, they were not utilising their full capacity despite increase in demand. Levy of duty would remove the unfair advantage caused by dumping, prevent decline and maintain availability of wider choice to the consumer.

d) On HF acid being raw material for many small scale units

13. The importers claimed that HF users are in the small scale sector and produce derivatives similar to what was produced by the petitioner, who can control HF availability in the market and stop supply to users. If imports are not allowed, the SSI users would face closure. Besides, as import constitute a very insignificant percentage compared to total production, no injury is suffered by the large scale manufacturers as seen from their economic parameters. The domestic industry has claimed that there was no reason to assume that Indian producers would not supply the material to the consumers since capacity has been set up for production and sales.

e) On the petitioner's export and domestic prices

14. The importers have alleged that the petitioners export HF acid and other value added products at prices much lower than the domestic sales price. Thus, though the cost of production was much lower, the product was sold at a good premium. The export price clearly demonstrate that the domestic producers could compete globally and do not require any safeguard. The domestic industry has stated that the price at which they were forced to export was not an appropriate parameter to decide dumping or injury.

f) On nil duty on fluorspar and lower exchange rates

15. The importers have alleged that the duty on the basic raw materials was brought to nil within 5 years and the \$ - Rs. exchange rate was all time low. With the raw material available at the international price, there was no need for any safeguard to the domestic industry when it was faced with a level playing field. The domestic industry has stated that the injury parameters considered on the basis of the actual cost of raw materials incurred by the petitioners automatically took into account all changes in the rate of duty and exchange rate.

g) On price variation between HF acid 70% and below 70%

16. The domestic industry has claimed that Chinese producers maintained significant price differences between HF-70% and other concentrations because of absence of duty on the former and revocation of duty would lead to export of other concentrations at significant levels. However, the importers have disputed this claim, as when prices are converted on HF-100% basis, they were at par. HF-70% would be priced cheaper due to reduced packing cost, freight advantage, etc and was imported only by the actual users and down-stream product manufacturers possessing the necessary expertise in its handling and use. Traders in HF acid import only HF-60% because of lack of expertise.

F. CONTINUATION OF DUMPING.

17. Under Section 9A (1) (c) of the Customs Tariff Act 1975,

“Normal value in relation to an article means:

(i) the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

(ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

a) Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory to an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

b) The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.”

18. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). None of the exporters from China PR responded.

F.1 Normal value determination for China PR**F1.1 Views of the interested parties****a) On absence of dumping by Chinese suppliers.**

19. The importers have claimed that the Chinese suppliers export only at fair and above normal value in India and sell at market determined prices as seen by the steady increase in the price of the imported HF acid. There was no dumping, but domestic producers raised their prices abnormally without proportionate increase in the cost of inputs. The only mechanism to protect the SSI from such a monopolistic and restrictive trade practice was to allow imports. The domestic industry has dismissed these contentions as baseless and unjustified, stating that there is sufficient legal mechanism within the country to address such concerns.

b) On dumping margin

20. The domestic industry has submitted that as no exporter from the subject country has responded to the Authority, they may be considered non-cooperative and the DA may record findings on facts available basis as per Rule 6(5). Further, that the exporters may be considered as operating under non-market economy (NME) conditions. However, the importers have claimed that the lack of exporter response demonstrates the disinterest of the Chinese exporters in dumping, in view of exports already being restricted by their own Government policy. They contend that identifying acid grade fluorspar as a key raw material, China had decided to cut down its export availability by about half from 2002 to 2010, effecting the restriction by introducing export licences for the raw material and the finished product, scrapping the 13% export subsidy from Dec 2006 and introducing 10% customs duty and export tax on fluorspar. End-user certificate certified by the Chamber of Commerce and endorsed by the Chinese Embassy have to be forwarded by the importers to the exporter to enable them to procure export licence. The appreciation of the RMB against the dollar has also increased the price of HF acid. Further, though China has a number of HF acid producers, only 2-3 companies export, since domestic consumption has increased and there was no surplus. This has resulted in a spurt in export price per MT to India from \$ 600-645 in 2004-05 to \$ 645-700 in Apr-Nov 06, \$ 730-790 in Dec 06-Apr 07 and \$ 950 - 990 in May-Oct. 07, being \$ 1067 in Nov 07. When China was discouraging HF exports, there was no need for levying AD duty. Besides, with China being a member of the WTA Agreement for the past 2 years, prices were at par with international prices and indicated a market economy.

c) On superior quality of imports

21. One of the importers has claimed that though they were the first to set up HF manufacturing plant in South India, they were forced to suspend production due to competition from the petitioner and other large scale manufacturers. They regarded the product as the quality of the Chinese product was superior, with very low impurity levels, enabling maintenance of high quality in their finished goods. The domestic

industry has refuted any difference in quality and has questioned the rationale of the lower price of Chinese imports if quality was superior.

22. The domestic industry has constructed the normal value based on the price of HF-100% prevailing in USA, which is reported to be the leading world producer of the subject product. As an alternative, the domestic industry has constructed the normal value based on its cost of production adjusted for selling, general and administrative expenses and reasonable profit.

F.2 Examination by the Authority

23. The Authority has taken note of the arguments and counter-arguments of the interested parties and the issues have been addressed in appropriate places in the findings.

Section 9A (5) of the CT Act provides that the Authority, in a sunset review, is required to examine whether the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. Hence, the issues before the Authority are to examine whether, in the event of definitive duties being removed or allowed to expire:

- ❖ dumping is likely to continue or recur;
- ❖ injury to the domestic industry is likely to continue or recur.

These have been addressed in the ensuing paragraphs.

F.2.1 Normal Value & Export Price

24. The Authority noted that no exporter from the subject country provided information or co-operated in the investigation to enable the determination of normal value and export price of the subject goods from the subject country. Therefore, the Authority has accorded non-market economy status to the non-co-operating exporters from the subject country and determined the dumping margin on the basis of facts available in terms of Rule 6 (8) of AD Rules read with Article 6.8 of the Agreement. The average exchange rate adopted for the purpose of this investigation for the POI was Rs 44.99 per \$.

F.2.1.1 Normal value

25. The Authority has constructed the normal value based on the cost of production, conversion costs and selling, general & administrative expenses of the domestic industry in India together with a reasonable margin of profit. The normal value so constructed is Rs. *** or \$ *** per MT.

F.2.1.2 Export Price

26. The Authority has taken the official price for calculation of dumping margin and price undercutting. A weighted average export price of the concentration-wise export price to India has been determined for the subject product. Adjustments like freight, insurance, commission and handling expenses have been conservatively allowed. The

weighted average export price has been taken as Rs *** or \$ *** per MT and after adjustments, the ex-factory export price comes to Rs *** or \$ *** per MT.

F.2.2 Dumping margin for China PR

	Rs/MT	\$/MT
CNV	***	***
Net EP	***	***
DM	***	***
DM%	21.22	

27. The dumping margin from China PR was found to be significant.

G. INJURY AND CAUSAL LINK: CONTINUATION OF INJURY

28. Rule 14 of Anti-Dumping Rules reads as follows:

Determination of Injury:

(1) In the case of imports from specified countries, the designated authority shall record a further finding that import of such article into India causes or threatens material injury to any established industry or materially retards the establishment of any industry in India.

(2) The designated authority shall determine the injury to domestic industry, threat of injury to domestic industry, material retardation to establishment of domestic industry and a causal link between dumped imports and injury, taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on price in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles and in accordance with the principles set out in Annexure II to these rules....."

29. Annexure II to the Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of the dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. Annexure-II (ii) of the Rules provides as under:-

(ii). "While examining the volume of dumped imports, the said Authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices ...the designated authority shall consider whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Annexure II to the Rules further provide that

“(iv). The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.”

G.1 Views of interested parties

30. The importers claim that there is no injury to the domestic industry as imports constitute a very small percentage and was insignificant compared to the total production and domestic demand. That imports are mainly due to the inability of the domestic industry to supply the required quantity and quality and on time. The raw materials are being imported at 0% duty and any increase in costs has been compensated by the strengthening of the rupee-dollar rate. Further, as per the annual report of the petitioners, there is no adverse effect on any relevant parameter, despite the increase in the raw material costs. In addition, the domestic industry has raised prices by Rs. 10500 per MT of HF- 70% over a period of 3 months, illustrating a monopolistic, anti-competitive and anti-consumer mindset. The domestic industry, however, claims injury from imports.

G.2 Examination by the Authority

31. The Authority has taken note of the arguments raised by the various parties in their submissions and the issue of likelihood of recurrence of dumping and injury to the domestic industry has been examined in the light of these arguments made before the Authority.

32. For the purpose of injury analysis, the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports on the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability. To examine the existence of injury and causal links between dumping and injury, if any, since a positive dumping margin has been established for the exports from the subject countries, the entire exports has been treated as dumped imports for the purpose of injury analysis and causal link examination.

A. Volume effect of dumped imports and impact on domestic industry

Import statistics

33. Transaction-wise data from DGCI&S show that the subject product imports has been reported under customs classifications 28111100. Since the product description is only indicative, all imports of subject goods irrespective of their classification have been included for the purpose of determination of volume, value and average import price. Imports have primarily been of HF-70%, except in the POI, when HF-60% and HF-100%

have been reported. Other concentrations have not been imported in any substantial quantity. Imports from China PR are mainly of HF-70%.

HF Acid Imports	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Total product imports				
Qty (MT)	307	1035	427	1669
Value (Rs lakhs)	102.81	248.30	124.25	602.59
Price/MT	33446	23981	29099	36098
Imports from subject country				
Qty (MT)	Nil	564	417	1616
Value (Rs lakhs)	Nil	121.26	116.38	502.49
Price/MT		21495	27953	31093
Share in total imports	0	54%	98%	97%
Imports from other countries				
Qty (MT)	307	471	10	53
Value (Rs lakhs)	102.81	127.05	7.67	100.10
Price/MT	33446	26955	77149	187706

Source: DGCIS data

The import data reported by the petitioners are as seen below:

Qty (MT)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
DGCIS data	Nil	564	358	1026
IBIS data	324	949	1083	1514

34. The Authority noted that in 2002-03, DGCIS data reported nil imports from the subject country, but from 2003-04, the percentage was 54% of total product imports and in the later years, to 96-97%. The data on average rates in the case of imports from other countries appear, prima facie, to be unreliable. On the other hand, data culled from the World Trade Atlas show Chinese exports of HF reported by China Customs as below:

China - Total Exports of Hydrogen Fluoride

Country	Quantity in MT				Value of exports in Rs lakhs			
	2002-03	2003-04	2004-05	POI	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Japan	5432	19952	40712	96815	1777.39	6199.63	11839.87	27551.44
India	324	594	923	1801	71.71	130.02	124.96	492.78
Singapore	574	879	2646	6309	185.80	268.73	756.26	1772.40
Korea, S	4144	5501	8987	22984	834.98	1004.94	1570.36	6204.20
Thailand	2735	2566	3400	3977	537.75	580.87	840.89	968.58
Turkey	448	754	1338	2906	108.28	172.05	322.34	727.29
Brazil	178	1392	1262	4143	40.73	261.41	277.57	1047.74
USA	342	1013	982	2903	63.44	284.46	307.75	728.90
Taiwan	11382	13977	12614	23773	1682.17	2363.76	2386.15	4956.14
Malaysia	1855	2359	2367	2490	302.46	378.43	449.81	528.63
World	29775	51588	75183	166370	6112.86	12121.43	18366.87	46177.68

Source of data: China Customs as reported in World Trade Atlas

35. The WTA data for the injury period shows that China exports the subject product to a number of countries, prominently, Japan with a share of 55% in total exports in the POI, Taiwan and South Korea (14%), followed distantly by Singapore, Brazil and India with shares of 4%, 2.5% and 1% respectively. As percentage of total Chinese exports, India's share is extremely insignificant. The value of exports to India is barely above 1% in the POI, mirroring the trend in quantity, with Japan claiming pride of place, followed by South Korea and Taiwan.

Trends in quantity					Share in total exports (%)			
Country	2002-03	2003-04	2004-05	POI	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Japan	100	367	750	1672	18.24	38.68	54.15	54.62
India	100	183	161	580	1.09	1.15	0.70	1.13
Singapore	100	153	461	1099	1.93	1.70	3.52	3.79
Korea, S	100	133	169	553	13.92	10.66	9.29	13.77
Thailand	100	94	124	131	9.19	4.97	4.52	2.15
Turkey	100	168	299	649	1.50	1.46	1.78	1.75
Brazil	100	784	710	2333	0.60	2.70	1.68	2.49
USA	100	297	282	851	1.15	1.96	1.28	1.75
Taiwan	100	123	111	209	38.23	27.09	16.78	14.30
Malaysia	100	127	128	134	6.23	4.57	3.15	1.50
World	100	173	253	558	100.00	100.00	100.00	100.00

Source of data: China Customs as reported in World Trade Atlas

36. Trend computation showed that exports to India rose almost three-fold from 161 in 2004-05 to 580 in the POI, but India's share in total exports ranged between 0.70-1.15% during the injury period. Barring a few countries, the quantity of exports to others spurted in the POI.

Avg Price/ MT (Rs)					Trends in unit price			
Country	2002-03	2003-04	2004-05	POI	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Japan	32723	31073	29082	30338	100	95	89	93
India	22110	20207	23911	26195	100	91	108	118
Singapore	31499	30590	28579	28091	100	97	91	89
Korea, S	19909	18270	22475	27088	100	92	113	136
Thailand	19661	22639	24736	27078	100	115	126	138
Turkey	22387	22825	24093	25031	100	102	108	112
Brazil	22932	18785	22000	25289	100	82	96	110
USA	18573	23140	21586	25089	100	125	116	135
Taiwan	14779	16912	18917	20848	100	114	128	141
Malaysia	16301	15704	19000	21229	100	96	117	130
World	20530	23497	25760	27773	100	114	125	135

Source of data: China Customs as reported in World Trade Atlas

37. The average price per MT of exports to India hovered between Rs. 20000-26000 during the injury period. Except in 2002-03, in all other years, the rate has been below the average world rates, though imports to USA, Taiwan and Malaysia have been at rates lower than the average Indian rate. Further, despite fluctuations, there is an underlying rising trend, albeit at a slow pace, which could have been construed as an attempt to

capture a large chunk of the domestic market but for the miniscule quantity of exports vis-à-vis other countries. Compared to DGCIS data, the average rate of Chinese imports as per WTA is lower, the variation being attributable partly to FOB versus CIF rates and partly to the time lag between order and delivery.

(in Rs per MT)

HF Acid Imports	2002-03	2003-04	2004-05	POI
DGCIS (1)	Nil	21495	27953	31095
WTA (2)	22110	20207	23911	26195
Difference (1) - (2)		1288	4042	4900

38. In the following analysis, data from the World Trade Atlas is utilised to assess volume of imports and domestic demand. However, for computation of the landed price DGCIS transaction-wise data is used, with the concentration-wise quantity of imports expressed in the anhydrous form.

a) Import volumes

39. With regard to the volume of the dumped imports, it has been examined whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

40. For the calculation of the domestic consumption/demand of the subject goods, the Authority added the sales volume of the domestic industry to the total imports into India.

Parameter (in MT)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Total Imports	632	1065	533	1290
Indexed	100	169	84	204
Imports from subject country	324	594	523	1254
Indexed	100	183	161	387
Imports from other countries	307	471	10	36
Indexed	100	153	3	12
Sales of Domestic industry	5707	4804	5309	6122
Indexed	100	84	93	107
Captive consumption	***	***	***	***
Indexed	100	105	100	118
Sales of other domestic producers	2200	2200	2200	2200
Domestic demand	***	***	***	***
Indexed	100	101	98	116
Domestic production	***	***	***	***

Note: * : Annualised on pro rata basis

Source: Domestic industry, DGCIS.

41. The Authority noted that domestic demand (indexed) grew by 116 over the injury period, compared to 107 in the domestic sales, 118 in captive consumption and 204 in

total imports, while subject countries imports recorded a 4-fold rise over the same period. Total imports have fluctuated over the injury period and a similar fluctuation of a smaller magnitude is observed in the subject country imports. Imports from other countries have sharply fallen off from 2004-05 leaving the field clear to imports from China PR. All along, domestic production has been less than domestic demand, a considerable part of which comes from the petitioners themselves. Inevitably, imports are needed to satisfy the unmet demand.

42. In their post-disclosure comments, the domestic industry have claimed that the inference that imports were necessitated due to its focus on captive consumption or inability to meet the merchant demand was factually incorrect, as demand was far lower than current capacity and with significant imports in the POI, production would be less than demand, so that what was relevant was the difference between domestic capacity and demand. The Authority has taken cognizance of this argument in the light of the increase in capacity by the domestic industry.

b) Actual and potential effect on sales and market share of the domestic industry:

% share in domestic demand	2002-03	2003-04	2004-05	POI ¹
a) Subject country imports	1.29	2.34	2.12	4.31
Indexed	100	181	164	333
b) other imports	1.22	1.86	0.04	0.12
Indexed	100	151	3	10
c) total imports	2.52	4.19	2.16	4.43
Indexed	100	167	86	176
d) domestic industry	22.74	18.91	21.57	21.03
Indexed	100	83	95	92
e) captive consumption	***	***	***	***
Indexed	100	103	102	102
f) other domestic producers	8.77	8.66	8.94	7.56
Indexed	100	99	102	86
Dumped imports/domestic production	***	***	***	***
Dumped imports/Total imports	51.34	55.76	98.13	97.24

Note: ¹ : Annualised on pro rata basis

Source: Domestic industry, DGCI&S.

43.. The Authority noted that total subject product imports increased from 2.52% of total demand to 4.43% over the injury period, while subject country imports increased from 1.29% to 4.31%. In other words, while total imports rose from an indexed figure of 100 in the base year to 176 in the POI, subject country imports rose to 333. Imports from other countries are effectively negligible. The Authority observed that the share of imports from the subject country to the total product imports has almost doubled from

51% in the base year to 97% in the POI. The share of other domestic producers has remained constant over the injury period. In any case, these producers are said to be consuming the subject product captively and not offering any quantity for merchant sale. Even in the domestic industry, captive use has increased over the injury period from 66% in the base year to 67% in the POI, though a peak of 68% was achieved in 2003-04. The market share of the domestic industry fell from 22.7% in 2002-03 to 21% in the POI, after slumping to 19% in 2003-04. However, if captive consumption were also included in domestic industry sales, then the fall in its market share is merely 0.7% over the injury period, despite the share of imports increasing by 3%. As a percentage of domestic industry production, subject country imports increased from 1.41% in 2002-03 to 4.79% in the POI, in tandem with the market share.

44. In their post-disclosure comments, the domestic industry have claimed that the determining market share and the volume effect inclusive of captive consumption was highly misleading. Therefore, the market shares have been recalculated excluding captive consumption in the demand and the position is as shown below.

% share in domestic demand	2002-03	2003-04	2004-05	POI ¹
Demand in MT (excluding captive consumption)	***	***	***	***
Indexed	100	95	94	113
Subject country imports	3.80	7.36	6.50	13.05
Indexed	100	194	171	344
Other imports	3.60	5.84	0.12	0.37
Indexed	100	162	3	10
Domestic industry sales	66.84	59.54	66.02	63.69
Indexed	100	89	99	95
other domestic producers	25.77	27.26	27.36	22.89
Indexed	100	106	106	89
Dumped imports/Total imports	7.40	13.20	6.62	13.42
Indexed	100	178	90	181

45. Domestic demand exclusive of captive consumption depicts a fluctuating trend, increasing in the POI by a factor of 113 from the base year demand. Total imports as a percentage of demand has risen by 6% over the injury period, of which a 9% increase in subject country imports has partly offset the 3% decrease in imports from other countries. Sales of both the domestic industry and of the other domestic producers have fallen by 3% over the injury period, from 67% and 26% respectively in 2002-03 to 64% and 23% in the POI. However, it is observed that exclusion of captive consumption under-states the real demand for the product.

c) Actual and potential effects on capacity, output and capacity utilization of the domestic industry

46. The performance of the domestic industry has been examined with reference to its capacity, output, capacity utilization and impact of dumped imports on these parameters, if any.

Parameter	2002-03	2003-04	2004-05	POI ¹
Capacity	23955	26635	37670	37670
Indexed	100	111	157	157
Production	***	***	***	***
Indexed	100	100	98	114
Capacity Utilization (%)	***	***	***	***
Indexed	100	90	62	73
Domestic Demand (MT)	***	***	***	***
Indexed	100	101	98	116

Note: ¹ : Annualised on pro rata basis

Source: Domestic industry.

The Authority noted that capacity was enhanced by the domestic industry twice during the injury period, as seen by the indexed figure increasing from 100 in the base year to 111 in 2003-04 and further to 157 in 2004-05. From 2003-04, capacity exceeded demand, which has increased only by 116 in the POI, compared to 2002-03. While the rise in capacity in 2003-04 was by de-bottlenecking the production plant, in 2004-05, it was through setting up of a new plant. Capacity utilisation fell consecutively to 87% in 2003-04 and 60% in 2004-05 due to the expansions and rose to 70% in the POI. The Authority noted the despite the increased capacity, domestic production remained below demand all along the injury period.

B. Price effect of dumped imports

47. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

48. For the purpose of this analysis, the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realisation (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the domestic industry have been compared with the landed price of imports from the subject countries to examine whether there has been significant price under-cutting or under-selling by the dumped imports compared with the price of the like product in India or whether such imports have depressed the prices or prevented price increases that otherwise would have occurred to a significant degree.

a) Price under-cutting and under-selling

49. Price under-cutting has been determined by comparing the landed value of dumped imports converted to the anhydrous form, with the weighted average ex-factory NSR of the domestic industry, where the rebates, discounts, commissions offered and the excise duties paid have been excluded. For price under-selling analysis, the landed value

of dumped imports was compared with the NIP of the subject goods, determined by taking into account verified cost and SGA expenses of the industry, together with a reasonable profit margin.

Parameter (Rs./MT)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Landed Price		37218	48399	47544
Indexed		100	130	128
Year to year change			11181	-856
Selling price	***	***	***	***
Indexed	100	112	111	123
Year to year change		5783	-404	5769
Net Sales Realization of Domestic Industry	***	***	***	***
Indexed	100	112	112	124
Year to year change		5477	138	5680
Cost of sales	***	***	***	***
Indexed	100	111	123	131
Year to year change		4590	5152	3433
Price undercutting ¹		***	***	***
Price undercutting %		28.23	7.69	18.18
Non-Injurious Price				***
Price Underselling ²				***
Price Underselling %				8.23

Note: ¹ NSR (-) landed value of imports. ² NIP (-) landed value

Source: Domestic industry, DGCIS.

50. The Authority noted that the indexed landed value of the subject country imports increased by 134 since 2003-04 and of NSR increased by 124 from 2002-03. The landed value was lower than the NSR and the cost of sales throughout the injury period. Computing the yearly changes, in 2004-05, the landed value is seen to increase by about Rs 11200 per MT compared to 2003-04, whereas the domestic selling price per MT decreased by Rs 400 and the NSR increased by about Rs 140 respectively, while cost of sales rose by Rs 5150 per MT. Despite the increase in the cost of sales in 2004-05 and in the POI, the selling price and NSR of the domestic industry increased substantially in the POI by about Rs 5700-5800 per MT, indicating that the industry earned large profits in the POI. Price under-cutting decreased from 29% in 2003-04 to 8% in 2004-05 and rose to 18% in the POI. The NIP for the domestic industry has been determined at Rs *** per MT in the POI following the Supreme Court orders in CA No: 1294/ 2001 against a landed value of Rs 47544, so that price under-selling is about 8%.

51. In their post-disclosure comments, the domestic industry has stated that:

- a) the weighted average of the NIP should be determined on the basis of merchant sales only, not of gross production.
- b) the treatment of packing cost did not seem correct, as HF-100% should have been segregated for determining packing cost, since it has not been packed and ISO container charges have been disallowed.
- c) The NSR did not appear correct because of exclusion of ISO container charges paid from cost of production.

52. However, the Authority observed that:

(a) for determining weighted average NIP, export sales alone are reduced from total production to arrive at production available for domestic requirement;

(b) the unit cost of consumption of packing material claimed has been allowed, in line with the practice followed in the original investigation and the ISO container charges claimed have not been disallowed; © as ISO container charges were not disallowed for determining NIP, they have not been reduced from sales price to derive NSR.

b) Price suppression and depression

53. To examine the price suppression effect of the dumped imports on the domestic prices, the trend of net sales realization of the domestic industry has been compared with the cost of sales. From the table, it is observed that though both cost of sales and NSR of the subject goods increased in the POI, the trend in sales realization has been lower than that in the cost of sales. But while the cost of sales increased by a factor of 8 from 2004-05 to the POI, the selling price and the NSR increased by a factor of 12 between the respective periods. Hence, there is no price depression. Further, both the selling price and the NSR have been higher than the cost of sales, barring a marginal fall in NSR in 2004-05. Comparing the changes in cost of sales with that in the selling price of the domestic industry over the injury period, it is observed that the change in the cost of sales has been higher from 2004-05, partly due to the increases in the raw material costs and capacity under-utilisation resulting in higher costs spread over marginally lower level of production relative to 2003-04 and partly due to the absorption of the cost increase without passing them on to the consumers through higher selling price. Hence there is some price suppression.

G.3 Examination of other injury factors

a) Actual and potential effects on profits

54. Profitability position of the domestic industry has been as under:

Parameter (in Rs. Lakhs)	2002-03	2003-04	2004-05	POI ¹
Cost of Sales of the DI	***	***	***	***
Sales realization of the DI	***	***	***	***
Profit/Loss on Domestic sales	***	***	***	***

Indexed	100	102	20	60
Profit/Loss (Rs./MT). ²	***	***	***	***
Indexed	100	122	21	63
Interest	***	***	***	***
Indexed	100	84	87	88
PBIT	***	***	***	***
Indexed	100	100	30	71

Note: ¹ Annualised on pro rata basis

² Sales Realization - Cost of Sales

Source: Domestic Industry.

Though the cost of sales of the domestic industry was less than the sales realization all through, the level of profits fell in 2004-05 and has not regained the earlier level in the POI, as seen by the trend. Nonetheless, the recovery in the POI has been remarkable.

b) Actual and potential effects on employment and wages

55. Employment level of the domestic industry has been as under:

Parameter	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Employees (No.)	***	***	***	***
Wages (Rs. Lakhs)	***	***	***	***
Indexed	100	76	72	87

Note: ¹ : Annualised on pro rata basis

Source: Domestic Industry.

The Authority noted that employment levels for the production of the subject product have increased slightly, while wages have fallen over the injury period. However, these parameters have not been considered as conclusive indicators of injury on account of the multi-product nature of the domestic industry.

c) Actual and potential effects on productivity

56. The Authority noted that per employee productivity and sales increased throughout the injury period, so that there is no injury reflected in these parameters. Nonetheless, because of the multi-product nature of the domestic industry, these parameters are not also being taken into account for injury analysis.

Parameter	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Productivity per Employee	***	***	***	***
Indexed	100	99	89	107
Sales per Employee (in Rs)	***	***	***	***
Indexed	100	93	94	124

Note: ¹ : Annualised on pro rata basis

Source: Domestic industry.

d) Actual and potential effects on cash flow, profits and return on investment

57. As the domestic industry is multi product, examination of cash flow may not be appropriate for the injury purposes. The Authority therefore, has examined cash profit situation of the domestic industry, capital employed and return on investments.

Parameter (in Rs. Lakhs)	2002-03	2003-04	2004-05	POI ¹
PBT	***	***	***	***
Indexed	100	102	20	68
Depreciation	***	***	***	***
Cash profit	***	***	***	***
Indexed	100	101	27	75
PBIT	***	***	***	***
Indexed	100	100	30	71
Capital Employed.	***	***	***	***
Indexed	100	114	162	196
Return on capital employed (%)	***	***	***	***
Indexed	100	88	19	36

Note: ¹ : Annualised on pro rata basis

Source: Domestic industry.

As already observed, PBT, PBIT and cash profit have been positive in all years. Although these three financial parameters were negatively affected in 2004-05, there has been a substantial improvement in the POI. Return on capital employed (% indexed) though positive, have declined in three years of the injury period, with a marked decline in 2004-05 on account of the fall in PBIT and the increase in capital employed, but increased by a factor of 16 in the POI compared to the previous year. However, all these parameters are lower in the POI relative to the base year, except for capital employed, which is almost double the base year level.

e) Inventories

58. Inventories position with the domestic industry has been as under:

Parameter (in MT)	2002-03	2003-04	2004-05	POI ¹
Average stock of inventory	***	***	***	***
Indexed	100	130	123	73
As % of sales	***	***	***	***

Note: ¹ : Annualised on pro rata basis

Source: Domestic industry.

The Authority noted that average inventories have declined over the injury period, both in absolute terms and as percentage of sales. Hence, this parameter does not reflect injury.

f) Ability to raise capital

59. No evidence has been placed before the Authority to substantiate that the domestic industry has been facing problems with regards to the ability to raise capital.

g) Growth

60. The Authority notes that the growth in demand and the improvement in the performance of the domestic industry in terms of the physical parameters such as production and sales from the base year to the POI, albeit with some fluctuations, while the financial parameters have not performed as well.

h) Degree of dumping margin

61. The Authority notes that dumping margin from the subject country, as an indicator of injury, is found to be significant.

G.4 Overall assessment

62. The above analysis of the factors shows that despite the gradual rise in imports from the subject country, the domestic industry has more or less been able to maintain its share in the market and has recorded only a fall of 1.7% over the injury period computing demand inclusive of captive consumption and by 3% if captive consumption is excluded.. There is price undercutting of 18%, price underselling of 8% and price suppression but no price depression.

G.5 Conclusions on injury

63. The Authority noted that the volume effect of subject country imports has been significant in absolute and relative terms and the price effect has resulted in price undercutting, price under-selling and price suppression.. However, the physical parameters of the domestic industry do not reflect considerable injury. Certain financial parameters which showed signs of injury in 2004-05 relative to the base year partly regained lost ground in the POI, though still below the base year's level.. Therefore, the Authority concludes that the domestic industry has suffered injury from dumped imports.

H. CAUSAL LINK

64. On issues of non-attribution, the mandatory factors have been examined as follows:

- ❖ **Contraction in Demand:** - Demand for the subject goods has increased during the injury period, although not consistently.

- ❖ **Pattern of consumption:** - Interested parties have stated that captive consumption by the domestic industry have been growing over the injury period resulting in reduced availability of the subject product for the market. This is seen to be the case. The Authority observed that the focus of the constituents of the domestic industry differed between increasing domestic sales and increasing the production of value added products, so that the overall availability for the market has been affected.
- ❖ **Imports from other countries-** Total subject product imports originating in countries other than the subject country are effectively insignificant, being replaced by increasing imports from the subject country.
- ❖ **Conditions of competition:** - The goods are freely importable. Though there are four domestic producers of the product including the petitioners, the other two are not competing in the domestic market as they produce other value added goods. However, the two domestic industry constituents cater to the same domestic market.
- ❖ **Developments in technology:** - There are no developments in technology to be taken note of.
- ❖ **Exports of the domestic industry:** The position of exports show that while the quantity (indexed) rose from 100 to 127 in 2004-05, it fell to 97 in the POI.

Parameter	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Exports-volume (MT)	***	***	***	***
Indexed	100	119	127	97
Exports- value (Rs lacs)	***	***	***	***
Indexed	100	122	140	112
Average rate (Rs/ MT)	***	***	***	***
Indexed	100	103	111	115

H.2 Factors establishing causal link

65. Examination of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance has been partly affected due to dumped imports from the subject country. Despite the substantial increase in the volume of dumped imports by 3% in the POI vis-à-vis 2002-03, the market share of the domestic industry has only declined by 1.7% over the injury period if demand inclusive of captive consumption is considered and by 3% if demand excluding captive consumption is computed.. The increase in demand has resulted from increased captive consumption by the petitioners. There is price under-cutting of 18% and price under-selling of 8% in the POI. Domestic sales have increased, as also capacity. Production has increased, but not as much as the increase in capacity and therefore, capacity utilization had declined in the interim, and improved in the POI relative to the previous year. Resultantly, profits, cash flow and return on investment of the domestic industry deteriorated in 2004-05 and improved in the POI. Many of the financial parameters, which had slumped in 2004-05, recouped their position quite substantially in the POI. The decline in 2004-05 is, in part, attributable to the capacity under-utilisation resulting from increased capacity addition and partly to dumped imports.

I. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN

66. The Authority has determined the NIP taking into account the cost of production and other associated costs of the domestic industry during the POI as per the principles laid down in the aforesaid judgment, which works out to Rs. 51457 per MT. The injury margin from the subject country is as below:

Injury margin (Rs. / MT)					
Per MT	Form	NIP	Landed value	Injury Margin	IM%
Rs per MT	Bulk	***	41563	***	9.42
	Packed	***	47544		8.23
\$ per MT	Bulk	***	932.82	***	9.42
	Packed	***	1056.76		8.23

J. LIKELIHOOD OF CONTINUATION OF DUMPING AND INJURY

67. Section 9A of the Act requires the Designated Authority, in an expiry review, to examine whether cessation of the duty would lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

J.1 Views of the interested parties

i) On export orientation of Chinese producers and excess production capacity

68. The domestic industry state the major raw materials for production of HF acid are fluorspar and sulphur, both which are available in huge deposits in China and mined under State control. These minerals from China face anti dumping duties imposed on them by other countries. Chinese producers had capacities in excess of domestic demand and compete aggressively in domestic and export markets, being willing to sell the product at any price to capture markets. As the Indian market was huge and HF acid had fairly big and rapid increasing demand, revocation of duty would result in significant surge in dumped imports, which had continued and was growing, with imports in the current period at eight times that in the period of the original investigation. The importers deny this, stating that China PR considered fluorspar as a strategic material, with progressive annual increase in prices and concurrent restriction in export quantity. The petitioner has also imported fluorspar from other countries, but the quality of the Chinese product was internationally recognised as the best. Besides, existence of significant disposable capacity with Chinese producers was not true nor that China possessed huge deposits of sulphur..

ii) On continued dumping and its likelihood

69. The domestic industry has claimed the volume of imports from China PR have increased since the period of the earlier investigation. The dumping margin established in the original investigation was 38%. Continued exports from China PR after imposition of duty clearly indicated that volumes would increase further if duties were revoked.

Earlier, the Chinese producers were dumping HF acid of all concentrations except 70% but after imposition of duty they started exporting HF-70% at dumping prices to cater to the requirements of HF-70% market as well as other lower concentrations.

J.2 Examination by the Authority

70. The Authority observed that in the current scenario, the volume of the imports from the subject countries recorded a very significant jump in the POI, crowding out imports from other countries. Imports from China have mainly been of HF-70% concentration and those of lower concentrations were being imported from the European Union and USA. However, despite the significant increase in imports, the domestic industry has lost only 1.7% of its market share in the POI, if captive consumption is included in the computation of demand and 3% of demand excluding captive consumption. Domestic production was less than the demand, despite higher capacity and the bulk of the production has been used captively. As regards the effect of subject country imports on prices, there is price under-cutting, price under-selling and price suppression, but no price depression.

71. In assessing the likely scenario, data reported by China Customs in the World Trade Atlas show a clear spurt in exports of HF acid to various countries, including India and evidence of restriction in fluorspar exports. The position of exports of both is as shown below:

China - Total Exports of Hydrogen Fluoride (in MT)					
Country	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
Japan	5432	19952	40712	58393	63391
India	324	594	523	1000	1914
Singapore	574	879	2646	3928	4969
Korea, S	4144	5501	6987	14505	16604
Taiwan	11382	13977	12614	15101	19436
World	29775	51588	75183	105117	122357
China - Total exports of Fluorspar – 25292200 (In MT)					
World	830364	813323	666080	689207	654209
USA	351781	374381	320896	415881	297339
Netherlands	72632	78963	55362	77881	125551
Japan	208318	201285	162146	107934	100914
Canada	37816	39323	54621	52927	48638
Italy	83498	56313	42354	13959	47775
India	36277	30078	18303	464	177

Source of data: China Customs, WTA

72. India in particular, has witnessed an extremely steep fall in fluorspar imports from China from 36,000 MT in 2002-03 to 177 MT in 2006-07, disassociated with any fall in demand. On the contrary, with demand for HF acid increasing, logically there would be an increase in fluorspar requirements. Fluorspar imports are from countries such as Kenya, Mexico, Mongolia, etc. But HF acid exports from China have more than tripled in the past two years, with the Chinese focus shifting to exports of value-added products rather than the basic raw material.

73. The Authority noted that raw material costs have increased relative to the base year for each key raw material. While the fluorspar rates could have increased due to imports from countries other than China, the sulphuric acid/oleum rate increases are linked to the rising petroleum prices and the possibility of these rates increasing is very likely, as the petroleum prices have continued to rise subsequent to the POI.

74. The Authority also noted that the reference price fixed in the original investigation was \$ 797.60 per MT of HF acid in its loose/ unpacked form and \$ 871.80 for the packed form. Considering the packed form of HF acid, the rupee benchmark price that prevailed over the injury period was lower than the landed value of the product imports from the subject country in 2004-05 and the POI, so that in effect, there was no duty in these years. Besides, as the bulk of product imports from China have been of HF-70%, no duty was payable, since HF-70% had been excluded from the ambit of duty in the original investigation, as imports of this concentration had been above the normal value computed.

K. INDIAN INDUSTRY'S INTERESTS

75. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate injury to the domestic industry caused by the unfair trade practice of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market in the interests of the country. Though anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and thereby have some impact on their relative competitiveness, their imposition would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affected the availability of the products to the consumers.

L. CONCLUSIONS:

76. After examining the issues raised and based on the analysis of current dumping and injury and likelihood of continuation/recurrence of dumping and injury, the Authority concludes that:

- i) The subject goods have entered from China PR at less than its normal value and the dumping margin of the subject goods imported is significant.
- ii) There is a likelihood of dumping to continue if the duties are revoked.
- iii) The domestic industry has suffered some injury at present due to the dumped imports; and there is a likelihood of intensified injury if duties are withdrawn.
- iv) Therefore, continued imposition of anti dumping duty is warranted against subject goods originating in or exported from China PR.

M. RECOMMENDATIONS

77. Having conducted the review and concluded that there is a likelihood of continuance of dumping from the subject country and consequent injury to the domestic industry, the Authority is of the opinion that continuation of the measure is required against imports from the subject country. However, considering the current level of dumping from the subject countries and injury suffered by the domestic industry, the Authority is of the opinion that the measure in force needs to be revised. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend continued imposition of the anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country, in terms of Section 9A(5) of the Act, in the form and manner described hereunder.

78. Having regard to the lesser duty rule, the Authority recommends continued imposition of definitive anti-dumping duty equal to the margin of injury or dumping, which is lesser to remove the likelihood of injury to the domestic industry. The duty in the original investigation was imposed on reference price basis and the Authority considers it appropriate to re-impose it on reference price basis. Therefore, the Authority recommends continuation of definitive antidumping duty, on all imports of subject goods originating in or exported from China PR, as the difference between the landed value and the reference price as indicated in Col 9 of the table below, if the landed value at the time of importation is below the value indicated at Col.9. For this purpose, landed value of imports will be determined as the value of the goods as assessed by Customs plus applicable basic Customs duty.

S.No:	Sub-Heading/ Tariff Item	Description of Goods	Specifications	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Reference price	Unit of Measurement	Currency
1	28111100	Hydrofluoric Acid	All concentrations (bulk)	China PR	Any	Any	Any	10.108 multiplied by % concentration	MT	USD
2	28111100	-do-	All concentrations (packed)	China PR	Any	Any	Any	132.94 + 10.108 multiplied by % concentration	MT	USD
3	28111100	-do-	All concentrations (bulk)	Any	China PR	Any	Any	10.108 multiplied by % concentration	MT	USD
4	28111100	-do-	All concentrations (packed)	Any	China PR	Any	Any	132.94 + 10.108 multiplied by % concentration	MT	USD

N. FURTHER PROCEDURE:

79. Any appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

80. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time limit stipulated for this purpose.

R. GOPALAN, Designated Authority